दक्ष®

16 सितम्बर 2018 का प्रश्न-पत्र
सम्पूर्ण हल एवं व्याख्या सहित

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड (RSSB)

2024

Complete Notes on

LDC

PAPER-II • PART-A

सामान्य हिन्दी

- लगभग 1500 से ज्यादा वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का समावेश
- राजस्थान में हुई LDC की विगत प्रतियोगी परीक्षाओं के (सात प्रश्न-पत्रों का) व्याख्या सहित अध्यायवार समावेश

आचार्य संदीप मालाकार

Daksh Books

Buy Online at : WWW.DAKSHBOOKS.COM

अनुक्रमणिका

अध्याय नं. अध्याय का नाम ..... पृष्ठ संख्या

❖ लिपिक ग्रेड-II एवं कनिष्ठ सहायक परीक्षा (LDC)

सामान्य हिन्दी • Part-A # 16 सितम्बर, 2018 ..... P-1—P-8

1 सन्धि और संधि-विच्छेद 1

1. स्वर संधि 1
2. व्यंजन संधि 10
3. विसर्ग संधि 16
- ❖ स्वर संधि के परीक्षोपयोगी उदाहरण ...7
- ❖ व्यंजन-संधि के परीक्षोपयोगी उदाहरण 15
- ❖ विसर्ग-संधि के परीक्षोपयोगी उदाहरण 17
- ❖ एल.डी.सी. की पूर्व भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये व्याख्या सहित महत्त्वपूर्ण प्रश्न..... 18
- ❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्न 22

2 सामासिक पदों की रचना एवं समास-विग्रह 27

1. अव्ययीभाव समास 27
2. तत्पुरुष समास 28
3. कर्मधारय समास 30
4. द्विगु समास 31
5. द्वंद्व समास 31
6. बहुव्रीहि समास 33
- ❖ 'समास' हेतु महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी तालिका 33
- ❖ तत्पुरुष समास के महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी उदाहरण 34
- ❖ कर्मधारय समास के महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी उदाहरण 36
- ❖ द्विगु समास के महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी उदाहरण 37
- ❖ उपपद तत्पुरुष के महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी उदाहरण..... 37
- ❖ मध्यमपदलोपी समास के महत्त्वपूर्ण उदाहरण 38
- ❖ नञ् तत्पुरुष के महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी उदाहरण 38
- ❖ द्वन्द्व समास के महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी उदाहरण 38
- ❖ प्रादि तत्पुरुष समास के महत्त्वपूर्ण उदाहरण..... 38
- ❖ बहुव्रीहि समास के महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी उदाहरण 38
- ❖ एल.डी.सी. की पूर्व भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये व्याख्या सहित महत्त्वपूर्ण प्रश्न..... 39
- ❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्न 42

3 उपसर्ग 48

- ❖ उपसर्ग तालिका - तत्सम (संस्कृत) उपसर्ग 48
- ❖ हिन्दी के उपसर्ग या उपसर्ग की तरह प्रयुक्त अव्यय (तद्भव उपसर्ग) 51
- ❖ अंग्रेजी भाषा के महत्त्वपूर्ण उपसर्ग 53
- ❖ 'उर्दू' उपसर्ग एवं 'अरबी' व 'फारसी' भाषाओं से आए हुए उपसर्ग..... 53
- ❖ एल.डी.सी. की पूर्व भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये व्याख्या सहित महत्त्वपूर्ण प्रश्न..... 54
- ❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्न 56

4 प्रत्यय 61

- ❖ कृत् प्रत्यय 61
- ❖ तद्धित प्रत्यय 62
- ❖ हिन्दी भाषा के तद्धित प्रत्ययों के महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी उदाहरण 65
- ❖ फारसी भाषा के तद्धित प्रत्ययों के उदाहरण 66
- ❖ अरबी भाषा के तद्धित प्रत्ययों के उदाहरण 67

अध्याय नं. अध्याय का नाम ..... पृष्ठ संख्या

❖ एल.डी.सी. की पूर्व भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये व्याख्या सहित महत्त्वपूर्ण प्रश्न 67
❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्न 69

5 पर्यायवाची शब्द 73
❖ महत्त्वपूर्ण पर्यायवाची शब्दों के परीक्षोपयोगी उदाहरण 73
❖ एल.डी.सी. की पूर्व भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये व्याख्या सहित महत्त्वपूर्ण प्रश्न 85
❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्न 87

6 विपरीतार्थक (विलोम) शब्द 90
❖ उपसर्ग जोड़कर बनने वाले विलोम शब्द 90
❖ विलोम शब्द तालिका 90
❖ एल.डी.सी. की पूर्व भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये व्याख्या सहित महत्त्वपूर्ण प्रश्न 94
❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्न 96

7 अनेकार्थक शब्द 100
❖ 'अ', 'आ', 'इ', 'ई' से निर्मित अनेकार्थक शब्द 100
❖ 'उ', 'ऊ' से निर्मित अनेकार्थक शब्द 100
❖ 'ओ', 'औ', 'ऋ' से निर्मित अनेकार्थक शब्द 100
❖ 'क', 'ख', 'ग' से निर्मित अनेकार्थक शब्द 100
❖ 'घ', से निर्मित अनेकार्थक शब्द 101
❖ 'च', 'छ', 'ज' से निर्मित अनेकार्थक शब्द 101
❖ 'ट' से निर्मित अनेकार्थक शब्द 101
❖ 'त', 'द' से निर्मित अनेकार्थक शब्द 101
❖ 'ध', 'न' से निर्मित अनेकार्थक शब्द 102
❖ 'प', 'फ', 'ब' से निर्मित अनेकार्थक शब्द 102
❖ 'भ', 'म' से निर्मित अनेकार्थक शब्द 102
❖ 'य', 'र', 'ल', 'व' से निर्मित अनेकार्थक शब्द 102
❖ 'श', 'ष', 'स', 'ह' से निर्मित अनेकार्थक शब्द 103
❖ 'श्र', 'क्ष' से निर्मित अनेकार्थक शब्द 103
❖ एल.डी.सी. की पूर्व भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये व्याख्या सहित महत्त्वपूर्ण प्रश्न 103
❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्न 105

8 शब्द-युग्म 108
❖ एल.डी.सी. की पूर्व भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये व्याख्या सहित महत्त्वपूर्ण प्रश्न 111
❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्न 114

9 संज्ञा शब्दों से विशेषण बनाना 116
❖ संज्ञा 116
❖ संज्ञा को पहचानने के विशेष नियम 116
1. व्यक्तिवाचक संज्ञा 116
2. जातिवाचक संज्ञा 117
❖ जातिवाचक संज्ञा के दो उपभेद 117
(i) द्रव्यवाचक संज्ञा ..... 118 (ii) समूहवाचक संज्ञा 118
3. भाववाचक संज्ञा 118
❖ विशेषण के संज्ञा के रूप में प्रयोग करने से संबंधित उदाहरण 119
❖ व्यक्तिवाचक के जातिवाचक के रूप में प्रयोग करने से संबंधित उदाहरण 119

अध्याय नं. अध्याय का नाम ..... पृष्ठ संख्या

❖ व्यक्तिवाचक का जातिवाचक के रूप में प्रयोग करने से संबंधित उदाहरण 119
❖ जातिवाचक का व्यक्तिवाचक के रूप में प्रयोग करने से संबंधित उदाहरण 119
❖ भाववाचक संज्ञा के जातिवाचक के रूप में प्रयोग के उदाहरण 119
❖ संज्ञाओं से अन्य संज्ञाओं में परिवर्तन 120
❖ जातिवाचक संज्ञाओं से भाववाचक संज्ञाएँ बनाना 120
❖ विशेषण से भाववाचक संज्ञाएँ बनाना 120
❖ अव्ययों से भाववाचक संज्ञाएँ बनाना 121
❖ क्रियाओं से भाववाचक संज्ञाएँ बनाना 121
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 122
❖ विशेषण [Adjectives] 125
❖ विशेषण के भेद 125
1. गुणवाचक विशेषण ..... 125 2. परिमाणवाचक विशेषण 126
3. संख्यावाचक विशेषण ..... 127 4. सार्वनामिक संकेतवाचक विशेषण .. 129
❖ सार्वनामिक विशेषण तथा सर्वनाम में अन्तर 129
❖ सार्वनामिक विशेषण के भेद 129
❖ सार्वनामिक विशेषण और सर्वनाम में अंतर 130
❖ प्रयोग के आधार पर विशेषण के भेद 130
❖ रचना की दृष्टि से विशेषण के अन्य भेद 130
❖ विशेषणों की रचना 130
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 131
❖ संज्ञा शब्दों से विशेषण बनाना [Making Adjectives from Nouns] 135
❖ विशेषणों की रचना के भेद 135
❖ संज्ञा एवं विशेषणों में महत्त्वपूर्ण अंतर 137
❖ तुलनाधर्मी विशेषण अथवा विशेषणों का तुलना में प्रयोग 137
❖ विशेषणों में तुलना की महत्त्वपूर्ण अवस्थाएँ 137
❖ गुणवाचक विशेषण की तीन महत्त्वपूर्ण अवस्थाएँ 138
❖ हिन्दी के प्रचलित विशेषणों की परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण तालिका 138
❖ एल.डी.सी. की पूर्व भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये व्याख्या सहित महत्त्वपूर्ण प्रश्न 139

10 शब्द-शुद्धि 142
❖ अशुद्ध शब्दों का शुद्धीकरण और शब्दगत अशुद्धि का कारण 142
❖ शब्दगत अशुद्धियों की महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी तालिका 146
❖ एल.डी.सी. की पूर्व भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये व्याख्या सहित महत्त्वपूर्ण प्रश्न 148
❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्न 150

11 वाक्य-शुद्धि (अशुद्ध वाक्यों का शुद्धीकरण और वाक्यगत अशुद्धि का कारण) 154
❖ वाक्यगत अशुद्धि के भेद 157
❖ अशुद्ध वाक्यों का शुद्धीकरण और वाक्यगत अशुद्धियों का कारण 157
❖ एल.डी.सी. की पूर्व भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये व्याख्या सहित महत्त्वपूर्ण प्रश्न 164
❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्न 167

12 वाच्य (कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य प्रयोग) 171
❖ वाच्य के भेद 171

अध्याय नं. अध्याय का नाम ..... पृष्ठ संख्या

❖ वाच्य सम्बन्धी अन्य महत्वपूर्ण नियम 172
❖ वाच्य सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी बिंदु 173
❖ वाच्य का प्रयोग एवं अन्विति 173
❖ एल.डी.सी. की पूर्व भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये व्याख्या सहित महत्त्वपूर्ण प्रश्न 174
❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्न 177

13 क्रिया (सकर्मक, अकर्मक और पूर्वकालिक क्रियाएँ) 180

❖ क्रिया के भेद 180
1. सकर्मक क्रिया 180
❖ सकर्मक क्रियाओं हेतु मुख्य नियम 180
❖ अकर्मक से सकर्मक में परिवर्तन के महत्त्वपूर्ण नियम 181
❖ अकर्मक व सकर्मक क्रियाओं के भेद एवं प्रभेद 181
2. अपूर्ण सकर्मक क्रिया 181
1. पूर्ण सकर्मक 181
2. अकर्मक क्रिया 182
3. प्रेरणार्थक क्रिया 183
4. द्विविध क्रियाएँ 184
5. अनेकार्थक क्रिया 184
6. सहायक क्रिया 184
7. समापिका तथा असमापिका क्रिया 185
8. संयुक्त क्रिया 185
9. पूर्वकालिक क्रिया 185
10. नामधातु क्रिया 186
11. तात्कालिक क्रिया 186
12. व्युत्पन्न अकर्मक क्रिया 186
13. समस्त क्रिया 187
14. संयुक्त क्रिया 187
15. मिश्र क्रिया 187
❖ एल.डी.सी. की पूर्व भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये व्याख्या सहित महत्त्वपूर्ण प्रश्न 188
❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्न 190

14 वाक्यांश के लिए एक सार्थक शब्द 194

❖ एल.डी.सी. की पूर्व भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये व्याख्या सहित महत्त्वपूर्ण प्रश्न 200
❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्न 202

15 मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ 206

❖ मुहावरों का महत्त्व 206
❖ मुहावरों के अर्थ और उनके महत्त्वपूर्ण वाक्य प्रयोग 206
❖ मुहावरा एवं लोकोक्ति में अन्तर 206
❖ एल.डी.सी. की पूर्व भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये व्याख्या सहित महत्त्वपूर्ण प्रश्न 211
❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्न 213
❖ लोकोक्तियाँ 216
❖ लोकोक्तियों के अर्थ और उनके महत्त्वपूर्ण वाक्य प्रयोग 216

अध्याय नं. अध्याय का नाम ..... पृष्ठ संख्या

❖ एल.डी.सी. की पूर्व भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये व्याख्या सहित महत्त्वपूर्ण प्रश्न 221
❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्न 223

16 पारिभाषिक शब्दावली (अंग्रेजी के पारिभाषिक शब्दों के समानार्थक हिन्दी शब्द) 227

❖ पारिभाषिक शब्दावली (अंग्रेजी शब्दों के समकक्ष हिन्दी शब्द) 227
1. प्रशासन में सामान्य प्रयुक्त अभिव्यक्तियाँ 233
2. हिन्दी और अंग्रेजी में प्रयुक्त समान शब्द 233
3. कार्यालयों में सामान्यतः नित्य प्रयुक्त वाक्यांश 233
4. न्यायालय में प्रयुक्त शब्द और वाक्यांश 234
5. प्रमुख सरकारी पद एवं विभाग 234
❖ संक्षेपाक्षर (Abbreviation) 235
❖ स्नातकोत्तर उपाधियाँ (Master's Degrees) 235
❖ प्रमाण-पत्र (Certificates) 236
❖ एल.डी.सी. की पूर्व भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये व्याख्या सहित महत्त्वपूर्ण प्रश्न 236
❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्न 238

17 सरल, संयुक्त और मिश्र वाक्यों का हिन्दी में रूपान्तरण और हिन्दी वाक्यों का अंग्रेजी में रूपान्तरण 243

❖ हिन्दी से अँग्रेजी अनुवाद के महत्वपूर्ण निर्देश 243
❖ वाक्य का रूपांतरण 247
❖ Translation of English Sentences into Hindi Sentences 250
❖ अँग्रेजी वाक्यों का हिन्दी वाक्यों में रूपान्तरण 250
❖ हिन्दी वाक्यों का अँग्रेजी वाक्यों में रूपान्तरण 250
❖ Translation of Hindi Sentences into English Sentences 250
❖ हिन्दी से अंग्रेजी रूपान्तरण के अन्य अदाहरण 252
❖ एल.डी.सी. की पूर्व भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये व्याख्या सहित महत्त्वपूर्ण प्रश्न 254
❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्न 256

18 कार्यालयी पत्रों से सम्बन्धित ज्ञान 258

❖ कार्यालयी पत्र 262
❖ कार्यालयी पत्र के आवश्यक अंग 262
❖ शासनादेश (Government Order) 265
❖ कार्यालय आदेश (Office Order) 267
❖ अनुस्मारक या स्मरण-पत्र (Reminder) 270
❖ अर्द्धशासकीय या अर्द्धसरकारी-पत्र 271
❖ प्रेस विज्ञप्ति 272
❖ परिपत्र (Circular) 274
❖ कार्यसूची (Agenda) 276
❖ कार्यवृत्त (Proceadings) या कार्यवाही 276
❖ कार्यालय-टिप्पणी 278
❖ एल.डी.सी. की पूर्व भर्ती परीक्षाओं में पूछे गये व्याख्या सहित महत्त्वपूर्ण प्रश्न 281
❖ अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्न 284

LDC भर्ती परीक्षा 2018

[Exam Date : 16 September 2018]

1. 'वह अपने कार्य में व्यस्त था।' हिन्दी वाक्य का अंग्रेजी में रूपान्तरण होगा—

(A) He was busy with his work.
(B) He was not busy with his work.
(C) He is busy in his work.
(D) He is busy with his work. **[A]**

व्याख्या—'वह अपने कार्य में व्यस्त था।' हिन्दी वाक्य का अंग्रेजी में रूपान्तरण होगा - He was busy with his work.

(A) He was not busy with his work.
वह अपने कार्य में व्यस्त नहीं था।
(B) He is busy in his work.
वह उसके कार्य में व्यस्त है।
(C) He is busy with his work.
वह अपने कार्य में व्यस्त है।

2. 'Grant' अंग्रेजी शब्द का हिंदी पारिभाषिक शब्द होगा—

(A) मदद (B) अनुदान
(C) सहायता (D) छात्रवृत्ति **[B]**

व्याख्या—'Grant' अंग्रेजी शब्द का 'हिन्दी पारिभाषिक' शब्द होगा। अनुदान।

✧ मदद—Subsidiary
✧ सहायता—Subsidire
✧ छात्रवृत्ति—Scholarship

3. 'घर में नहीं दाने अम्मा चली भुनाने' लोकोक्ति का सही अर्थ होगा—

(A) सामर्थ्य से बाहर कार्य करना
(B) शेखी मारना
(C) व्यर्थ के कामों में समय नष्ट करना
(D) धन ना होने पर भी ढोंग करना **[D]**

व्याख्या—'घर में नहीं दाने अम्मा चली भुनाने।' लोकोक्ति का सही अर्थ होगा – धन ना होने पर भी ढोंग करना
शेखी मारना – बढ़चढ़ कर बातें करना।

4. 'कम या नपा-तुला खर्च करने वाला' वाक्यांश के लिए सार्थक शब्द है—

(A) मिति (B) मितव्ययी
(C) अल्पखर्ची (D) न्यूनी **[B]**

व्याख्या—'कम या नपा-तुला खर्च करने वाला।' वाक्यांश के लिए सार्थक शब्द है—मितव्ययी।

5. निम्नलिखित में से सकर्मक क्रिया किस वाक्य में है—

(A) रामू सदा रोता रहता है।
(B) हरीश छत पर है।
(C) माधव सोता है।
(D) चंदन ने सब्जी खरीदी **[D]**

व्याख्या—उपरोक्त में से 'सकर्मक क्रिया' जिस वाक्य में है वह है—**चंदन ने सब्जी खरीदी।**

✧ **सकर्मक क्रिया में कर्म होता है**—अकर्मक क्रिया में कर्ता तो होता है परन्तु कर्म नहीं होता है।

6. 'आज प्राचार्य द्वारा मधुर गीत गाया गया।' वाक्य का कर्तृवाच्य में परिवर्तित रूप है—

(A) आज प्राचार्य मधुर गीत गायेंगे।
(B) आज प्राचार्य ने मधुर गीत गाया।
(C) प्राचार्य द्वारा आज गाया गीत मधुर था।
(D) आज प्राचार्य गीत को गायेंगे। **[B]**

व्याख्या—**'आज प्राचार्य द्वारा मधुर गीत गाया गया।'** वाक्य का कर्तृवाच्य में परिवर्तित रूप है—

(A) आज प्राचार्य ने मधुर गीत गाया

कर्तृवाक्य में क्रिया कर्ता के अनुसार होती है।

✧ कर्मवाक्य में क्रिया कर्मानुसार व भाववाच्य में क्रिया भाव के अनुसार होती है।

कर्मवाच्य—पुस्तक लड़के द्वारा पढ़ी जाती है।
भाववाच्य—चिड़िया से उड़ा नहीं जाता।

7. निम्नलिखित में से अशुद्ध वाक्य छाँटिए—

(A) सभा में सभी वर्ग के लोग थे।
(B) भारत में कई जातियों के लोग रहते हैं।
(C) इस कक्षा में सबसे अच्छा छात्र कौन है?
(D) तुम अपनी किताबें ले आओ। **[A]**

व्याख्या—उपरोक्त में से अशुद्ध वाक्य है—सभा में सभी वर्ग के लोग थे।

शुद्ध वाक्य है—सभा में सभी वर्गों के लोग थे। अन्य वाक्य शुद्ध हैं।

1 सन्धि और संधि-विच्छेद

❖ 'संधि का अर्थ होता है—जुड़ना। वर्णों के परस्पर मेल होने (जुड़ने) पर उत्पन्न ध्वनि विकार को **संधि** कहते हैं।

❖ **संधि के भेद**—(1) स्वर (2) व्यंजन (3) विसर्ग

1. स्वर संधि

❖ स्वरों के परस्पर मेल से उत्पन्न ध्वनि विकार स्वर संधि कहलाता है।

ओष्ठाकृति के आधार पर स्वरों के भेद

(1) **वृत्तामुखी स्वर**—ऑ, उ, ऊ, ओ, औ
(2) **अवृत्तामुखी स्वर**—अ, आ, इ, ई, ए, ऐ

❖ स्वर संधि को स्पष्ट करने के लिए हिन्दी व्याकरण में प्रयुक्त स्वरों के बारे में जानना आवश्यक है।

❖ हिन्दी में मूलतः 11 स्वर होते हैं। जैसे—
अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

रचना या उत्पत्ति के आधार पर स्वरों के भेद

(1) मूल स्वर (2) संधि स्वर

1. मूल स्वर—जिन स्वरों की उत्पत्ति किन्हीं दूसरे स्वरों से नहीं हुई है, उन्हें 'मूल स्वर' कहते हैं। हिन्दी में इनकी संख्या चार है—
(1) अ (2) इ (3) उ (4) ऋ

2. संधि स्वर—मूल स्वरों के मेल से बने स्वरों को संधि स्वर कहा जाता है। इनमें रचना की दृष्टि से 2 भेद हैं—
(i) दीर्घ स्वर (ii) संयुक्त स्वर

(i) दीर्घ स्वर—जब दो समान स्वर मिलते हैं तो वे दीर्घ हो जाते हैं।
हिन्दी में 3 दीर्घ स्वर हैं—आ, ई, ऊ
इनकी रचना निम्न प्रकार हुई है—
✧ अ + अ = आ ✧ इ + इ = ई ✧ उ + उ = ऊ

(ii) संयुक्त स्वर—जब दो भिन्न-भिन्न स्वर मिलते हैं तो एक नया स्वर बनता है, उसे संयुक्त स्वर कहा जाता है।
हिन्दी में ए, ऐ, ओ, औ संयुक्त स्वर हैं।

❖ मात्रा की दृष्टि से इन्हें भी दीर्घ स्वरों की भाँति माना जाता है। इनकी रचना निम्न प्रकार से हुई है—
✧ अ/आ + इ = ए ✧ अ/आ + ए = ऐ
✧ अ/आ + उ = ओ ✧ अ/आ + ओ = औ

संध्यक्षर (संधि अक्षर)

❖ संयुक्त स्वरों को **'संध्यक्षर'** भी कहते हैं। मूल स्वरों के उच्चारण में जिह्वा अचल रहती है, जबकि संयुक्त स्वरों के उच्चारण में जिह्वा चलायमान अवस्था में रहती है।

❖ संयुक्त स्वर के उच्चारण में जिह्वा भी 'सरकती' रहती है इसलिए संयुक्त स्वर को **विसर्प (Glide)** भी कहते हैं।

जिह्वा के आधार पर स्वरों के भेद

❖ स्वर के उच्चारण में जिह्वा का जो भाग अधिक क्रियाशील रहता है, इस आधार पर स्वरों के निम्न भेद होते हैं—
✧ **अग्र स्वर**—इ, ई, ए, ऐ, ऋ
✧ **मध्य स्वर**—अ
✧ **पश्च स्वर**—आ, उ, ऊ, ओ, औ

स्वर तंत्रियों या कम्पन के आधार पर स्वरों के भेद

❖ मुँह में स्थित स्वर तंत्रियाँ जब कम्पन्न करती हैं तो उनके आधार पर निम्न भेद होते हैं—
✧ **घोष स्वर**—जब उच्चारण के समय स्वर तंत्रियों में कंपन/तनाव उत्पन्न हो तो घोष स्वर उच्चारित होता है।
नोट—हिन्दी में सभी स्वर घोष माने जाते हैं।
✧ **अघोष स्वर**—जब उच्चारण के समय स्वर तंत्रियों में कंपन/तनाव उत्पन्न नहीं हो तो अघोष स्वर उच्चारित होता है।
✧ **मर्मर स्वर**—घोष व अघोष स्वर के मध्य की स्थिति हो तो वह मर्मर स्वर होता है।

स्वर संधि के प्रमुख भेद

(1) **दीर्घ संधि** (2) **गुण संधि**
(3) **वृद्धि संधि** (4) **यण् संधि**
(5) **अयादि संधि** (6) **पूर्वरूप संधि**
(7) **पररूप संधि**

1. दीर्घ संधि

नियम—जब दो समान स्वर अथवा एक ही स्वर के दो रूप मिलते हैं तो दीर्घ स्वर बनता है।

❖ हिन्दी भाषा में अ, इ, उ ह्रस्व तथा आ, ई, ऊ दीर्घ स्वर माने जाते हैं। इस संधि में दो समान या ह्रस्व एवं दीर्घ स्वर परस्पर मिलकर हमेशा दीर्घ स्वर का निर्माण करते हैं।

❖ जब ह्रस्व स्वर (अ, इ, उ) और दीर्घ स्वर (आ, ई, ऊ) एक-दूसरे के बाद आ जाएँ तो दोनों को मिलाकर उसी स्वर का दीर्घ स्वर (स्वरूप) (आ, ई, ऊ) हो जाता है।

❖ इस संधि में निम्नानुसार ध्वनि परिवर्तन होता है—

✧ अ + अ = आ	✧ अ + आ = आ
✧ आ + अ = आ	✧ आ + आ = आ
✧ इ + इ = ई	✧ इ + ई = ई
✧ ई + इ = ई	✧ ई + ई = ई
✧ उ + उ = ऊ	✧ उ + ऊ = ऊ
✧ ऊ + उ = ऊ	✧ ऊ + ऊ = ऊ

2 सामासिक पदों की रचना और समास-विग्रह

❖ दो पदों के परस्पर मेल को समास कहते हैं। भाषा में **संक्षिप्तता, सारगर्भिता** और **सौन्दर्य की वृद्धि** के लिए समास का काफी महत्व है।

❖ पदों के मेल से जो नया पद बनता है उसे सामासिक पद कहते हैं।

❖ पदों की प्रधानता की दृष्टि से समास के मुख्य भेद—

(1) जिस सामासिक पद का पूर्व पद प्रधान हो—
जैसे—अव्ययीभाव

(2) जिस सामासिक पद का उत्तर पद प्रधान हो—
जैसे तत्पुरुष, कर्मधारय व द्विगु

(3) जिस सामासिक पद के दोनों पद प्रधान हों—
जैसे—द्वंद्व

(4) जिस सामासिक पद का अन्य पद प्रधान हो—
जैसे—बहुव्रीहि

समास के भेद

✧ **अव्ययीभाव समास**
✧ **तत्पुरुष समास**
✧ **कर्मधारय समास**
✧ **द्विगु समास**
✧ **द्वंद्व समास**
✧ **बहुव्रीहि समास**

1. अव्ययीभाव समास

❖ जब नया सामासिक पद अव्यय हो तो उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। अव्ययीभाव समास निम्न तीन प्रकार से बनता है—

✧ **जब प्रथम पद अव्यय हो**—जैसे—यथाशक्ति, प्रतिदिन, यथाक्रम, भरपेट, अनुरूप, अकारण, निर्विरोध, प्रतिबिम्ब, सकुशल, सपरिवार, भरसक, अभूतपूर्व, यथा समय आदि।

✧ **जब प्रथम पद नाम पद हो**—जैसे-विनयपूर्वक, आवश्यकतानुसार, विवेकपूर्वक, विश्वासपूर्वक, कथनानुसार, कुशलतापूर्वक, नित्यप्रति आदि।

✧ **जब संज्ञा या अव्यय पद के दोहराने से**—जैसे—लातोंलात, बातोंबात, द्वार-द्वार, पल-पल, घड़ी-घड़ी, बार-बार, साफ-साफ, धीरे-धीरे, बीचों-बीच, धड़ाधड़, भागमभाग, एकाएक, पहले पहल, बराबर, मन ही मन, आप ही आप, सरासर आदि।

❖ **नियम—(1) अव्यय शब्द 'यथा' से प्रारम्भ होने वाले सामासिक पदों का विग्रह उनके उत्तर पद के बाद 'के अनुसार' लिख कर किया जाता है।** जैसे—

समस्त पद	समास विग्रह	समस्त पद	समास विग्रह
यथाविधि	विधि के अनुसार	यथाक्रम	क्रम के अनुसार
यथागति	गति के अनुसार	यथार्थ	अर्थ के अनुसार
यथास्थिति	स्थिति के अनुसार	यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार
यथेच्छा	इच्छा के अनुसार	यथायोग्य	योग्यता के अनुसार
यथा स्थान	स्थान के अनुसार	यथा गुण	गुण के अनुसार

❖ **नियम—(2) अव्यय शब्द 'यथा' से बने पदों के विग्रह में जैसी है, शब्द लिखकर भी विग्रह किया जाता है।** जैसे—

समस्त पद	समास विग्रह	समस्त पद	समास विग्रह
यथा सम्भव	जैसा सम्भव हो	यथोचित	जैसा उचित हो
यथास्थिति	जैसी स्थिति हो	यथागति	जैसी गति हो
यथानुकूल	जैसा अनुकूल हो	यथामति	जैसी मति है

❖ **नियम—(3) जिस सामासिक पद में पहला पद 'बे', 'निर्', 'निस्', 'ना', 'नि' आदि हों उनका विग्रह करते समय उनके अन्त में 'रहित' एवं प्रारम्भ में 'बिना' शब्द लिखा जाता है।** जैसे—

समस्त पद	समास विग्रह	समस्त पद	समास विग्रह
बेखटके	बिना खटके के	बेचैन	बिना चैन के
बेफायदा	बिना फायदे के	बेधड़क	बिना धड़के के
बेवजह	बिना वजह के	बेदाग	बिना दाग के
निर्विवाद	बिना विवाद के	निर्विकार	बिना विकार के
बेकार	बिना कार्य के	निर्विरोध	बिना विरोध के
नीरोग	बिना रोग के	नीरस	बिना रस के
बेशर्म	बिना शर्म के	निश्चिन्त	बिना चिन्ता के

❖ **नियम—(4) 'प्रति' उपसर्ग से बने 'समस्त पद' के विग्रह करते समय प्रायः 'उत्तर पद' को दो बार लिख देते हैं अथवा एक शब्द से पहले 'हर' शब्द जोड़ देते हैं।** जैसे—

समस्त पद	समास विग्रह	समस्त पद	समास विग्रह
प्रति माह	हर माह	प्रतिदिन	हर दिन
प्रति व्यक्ति	हर व्यक्ति	प्रति छात्र	हर छात्र
प्रति पल	हर पल	प्रत्येक	हर एक
प्रत्यंग	हर अंग	प्रतिशत	हर शत
प्रतिक्षण	हर क्षण	प्रतिवर्ष	हर वर्ष

❖ **नियम—(5) 'पूर्व पद' 'आ' उपसर्ग से बना हो तो उसके विग्रह करने पर 'उत्तर पद' के अन्त में 'तक' लिखा जाता है।** जैसे—

समस्त पद	समास विग्रह	समस्त पद	समास विग्रह
आमरण	मरण तक	आजीवन	जीवन तक
आजन्म	जन्म तक (जन्म से)	आकण्ठ	कंठ तक

✧ आजानुबाहु—जानु (घुटने) से बाहु तक
✧ आपादमस्तक—पाद से मस्तक तक

3 उपसर्ग

❖ वे शब्दांश जो किसी शब्द के प्रारम्भ में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं **'उपसर्ग'** कहलाते हैं। इनका अपना स्वतंत्र अर्थ नहीं होता बल्कि ये किसी मूल शब्द में जुड़कर उसके अर्थ को नया रूप देते हैं।

❖ मूल शब्द के साथ उपसर्गों के जुड़ने से यहाँ ध्वनि विकार पैदा होता है तथा वहाँ संधि हो जाती है, इसलिये उपसर्गों के प्रयोग के समय संधि आदि के नियमों का भी विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए। हिन्दी में उपसर्गों द्वारा अनेक नये शब्दों का निर्माण होता है।

1. तत्सम् उपसर्ग	2. तद्भव उपसर्ग	3. विदेशी उपसर्ग

1. **तत्सम् उपसर्ग**—हिन्दी में संस्कृत के उपसर्ग ज्यों के त्यों प्रचलित हैं। इन्हें 'तत्सम्' उपसर्ग कहा जाता है। इनकी कुल संख्या 22 है—
अति, अधि, अनु, अप, अभि, अव, आ, उत्, उप, दुर्, दुस्, नि, निर्, निस्, प्र, परा, परि, प्रति, वि, सु, सम्, अन् आदि तत्सम उपसर्ग के रूप में प्रयुक्त किये जाते हैं।
2. **तद्भव उपसर्ग**—ये उपसर्ग हिन्दी के अपने उपसर्ग हैं तथा संस्कृत से परिवर्तित होकर हिन्दी में आये हैं। जैसे—
अन, अध, उ, उन, औ, कु, चौ, पच, पर, भर, बिन, ति, दु, का, स, चिर, न, बहु, आप, नाना, क, सम
3. **विदेशी उपसर्ग**—हिन्दी में बड़ी संख्या में अरबी, फारसी तथा अंग्रेजी भाषा के उपसर्गों का प्रचलन है। इन्हें विदेशी उपसर्ग कहा जाता है। जैसे—
बे, दर, बा, कम, ला, ना, हर, खुश, बद, सर, ब, बिला, देश, नेक, ऐन, हम, अल, गैर, हैड, हाफ, सब, कु

उपसर्गों के महत्वपूर्ण नियम

1. अघोष, तालव्य व्यंजन ('श' एवं 'च') से पहले **'निश्'** तथा **'क', 'प', 'फ' से पहले 'निष्' तथा दंत्य अघोष व्यंजनों (त, स) से पूर्व 'निस्'** हो जाता है।
2. **'दुस्' उपसर्ग का नियम**—इसमें नियम यह है कि—
दुस् = (दुस् + त, स)
दुश् = दुस् + तालव्य व्यंजन (च, छ, श)
दुष् = (दुस् + क, प, फ)
3. **'उत्' एवं 'उद्' उपसर्ग का नियम**—संस्कृत के मूल ग्रंथों में **'उद्'** उपसर्ग है **'उत्'** नहीं है। **'उत्'** तो **'उद्'** का ही संधि रूप है। संस्कृत की व्यंजन संधि में **'उद्'** उपसर्ग का घोष **'द'** इसके पश्चात् अघोष व्यंजन आने पर अघोष **'त'** के रूप में बदल जाता है अतः यह 'उत्' बन जाता है जबकि मूल उपसर्ग **'उद्'** ही है **'उत्'** नहीं है।

उपसर्ग तालिका - तत्सम (संस्कृत) उपसर्ग

उपसर्ग	संबंधित अर्थ	महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी उदाहरण
1. **प्र**	अधिक, आगे, विशेष	प्रकाश, प्रभु, प्रसिद्ध, प्रकोप, प्रपंच, प्राध्यापक, प्रताप, प्रोन्नति, प्रबल, प्रदर्शन, प्रयोग, प्रसिद्ध, प्रख्यात, प्रलाप, प्रमोद, प्रगति, प्रकृष्ट, प्रगल्भ, प्रवीण (प्र + वीन), प्रार्थी (प्र + अर्थी), प्राचार्य (प्र + आचार्य), प्रारब्ध (प्र + आरब्ध), प्राध्यापक (प्र + अध्यापक), प्रेक्षक (प्र + ईक्षक), प्रोज्ज्वल (प्र + उज्ज्वल), प्रोन्नत (प्र + उन्नत), प्रोत्साहन (प्र + उत्साहन), प्रणीत (प्र + नीत), प्रमाण (प्र + मान), प्रादेशिक (प्र + आदेशिक)
2. **परा**	उलटा, नाश (विरुद्ध), अनादर, हीनता	पराजय, पराक्रम, पराभव, पराजित, परावर्तन, पराकाष्ठा, परागमन, पराधीन, पराविद्या, परास्त (परा + अस्त)
3. **अप**	लघुता, हीनता	अपमान, अपशब्द, अपहरण, अपयश, अपव्यय, अपकर्ष, अपंग, अपेक्षा, अपकीर्ति, अपभ्रंश, अपशकुन,अपवाद, अपचार, अपवर्तन (अप + वर्तन), **स्वर संधि के अपवाद**— अपांग (अप + अंग), अपेक्षित (अप + ईक्षित)
4. **सम्**	पूर्णता, संयोग, समान रूप से	संकल्प, संगम, सम्मेलन, संस्कृत, संयोग, संवाद, सम्प्रेषण, संचार, संतोष, सम्पर्क, संचय, संयम, संगति, सम्बोधन, संधि, संवेदना, समर्पण, समागम, समाधान, समादर, समापन, समायोजन, समारोह, समारम्भ, समास, समग्र (सम् + अग्र), समन्वय (सम् + अन्वय), समर्थ (सम् + अर्थ), समाचार (सम् + आ + चार), समृद्ध (सम् + ऋद्ध), समुच्चय (सम् + उत् + चय), संकीर्ण (सम् + कीर्ण), संक्षेपण (सम् + क्षेपण), संहार (सम् + हार)

4 प्रत्यय

❖ शब्द के अन्त में जुड़ने वाले अक्षर या शब्दांश जिनसे शब्द का अर्थ निश्चित या विशेषता से युक्त हो जाता है, वह **प्रत्यय** कहलाता है। जैसे— दूधिया और सफ़ाई। दूधिया में दूध पर इया (दूध + इया) प्रत्यय और सफ़ाई में सफ़ा में 'ई' (सफ़ा + ई) प्रत्यय लगा हुआ है।

❖ इन प्रत्ययों का स्वतन्त्र रूप से कोई अर्थ नहीं होता है। इनकी सार्थकता शब्दों के अन्त में जुड़ने से ही होती है।

❖ **प्रत्यय के भेद—1.** कृत् प्रत्यय **2.** तद्धित प्रत्यय

कृत् प्रत्यय

❖ धातु के अन्त में जुड़कर उनके अर्थों में परिवर्तन करने वाले प्रत्यय **कृत् प्रत्यय** कहलाते हैं। कृत् प्रत्ययों के योग से बनने वाले शब्द **कृदन्त** कहलाते हैं। **''कृत् प्रत्यय है अन्त में जिनके''** वे कृदन्त कहलाते हैं।

कृत् प्रत्यय के भेद

✧ कर्तृ वाचक कृत् प्रत्यय ✧ कर्म वाचक कृत् प्रत्यय
✧ करण वाचक कृत् प्रत्यय ✧ भाव वाचक कृत् प्रत्यय
✧ क्रिया-वाचक या क्रिया द्योतक कृत् प्रत्यय

1. कर्तृ वाचक कृत् प्रत्यय—जिस प्रत्यय के धातु के अन्त में जुड़ने से शब्द का अर्थ कर्ता या क्रिया का करने वाला व्यक्त होता है, वह **कर्तृ वाचक कृदन्त** (कृत् प्रत्यय) कहलाता है। जैसे—

धातु या मूल शब्द	प्रत्यय	कृदन्त शब्द
'अक' प्रत्यय के उदाहरण		
लिख्	अक	लेखक
पठ्	अक	पाठक
कृ (कार्)	अक	कारक
गै (गाय्)	अक	गायक
घात्	अक	घातक
चाल्	अक	चालक
आ+छाद्	अक	आच्छादक (ढकने वाला)
जात्	अक	जातक (पैदा होने वाला)
तार् (तृ)	अक	तारक
(धृ) धर्	अक	धारक
नाश्	अक	नाशक
धाव्	अक	धावक
(नौ) नाव्	अक	नाविक
(पौ) पाव्	अक	पावक
'आक' प्रत्यय के उदाहरण		
तैर	आक	तैराक
चाल	आक	चालक
'आकू' प्रत्यय के उदाहरण		
लड़	आकू	लड़ाकू
भिड़	आकू	भिड़ाकू
पढ़	आकू	पढ़ाकू
'आका' प्रत्यय के उदाहरण		
धम	आका	धमाका
धड़	आका	धड़ाका
लड़	आका	लड़ाका

धातु या मूल शब्द	प्रत्यय	कृदन्त शब्द
'आड़ी' प्रत्यय के उदाहरण		
अन्	आड़ी	अनाड़ी
अग् (आगे)	आड़ी	अगाड़ी
खिल् (खेल)	आड़ी	खिलाड़ी
कब्	आड़ी	कबाड़ी
'ऐत' प्रत्यय के उदाहरण		
लठ	ऐत	लठैत
भड़	ऐत	भड़ैत
'अक्कड़' प्रत्यय के उदाहरण		
घूम	अक्कड़	घुमक्कड़
बुझ	अक्कड़	बुझक्कड़
भूल	अक्कड़	भुलक्कड़
'एया' प्रत्यय के उदाहरण		
रख	एया	रखैया
खिव	एया	खिवैया
(गै) गव	एया	गवैया
'हार' प्रत्यय के उदाहरण		
राखन	हार	राखनहार
चाखन	हार	चाखनहार

❖ 'वाला' प्रत्यय भी हिन्दी भाषा का कर्तृवाचक कृत् प्रत्यय ही है और अधिकांश क्रियावाचक पदों पर यह प्रत्यय जुड़ जाता है।
जैसे—पढ़ने वाला, लिखने वाला, दिखने वाला, उठने वाला, दौड़ने वाला, रुकने वाला, हँसने वाला, देने वाला, बोलने वाला आदि।

2. कर्मवाचक कृत् प्रत्यय—जो कृत् प्रत्यय धातु के अन्त में जुड़कर कर्म का अर्थ प्रकट करते हैं वे प्रत्यय **कर्मवाचक कृत् प्रत्यय** कहलाते हैं।

5 पर्यायवाची शब्द

❖ किसी भी भाषा में एक भाव को व्यक्त करने के लिए एक ही शब्द होता है, फिर भी भाव के बहुत ही निकट तक पहुँचने वाले कई शब्द हो सकते हैं।
जैसे—
✧ **वृक्ष** कबहु नहिं फल भखै, नदी न संचै नीर।
✧ बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे **पेड़** खजूर।
✧ अति विशाल **तरु** एक उपारा।
✧ खाएसि फल अरु **विटप** उपारे।

❖ इन पंक्तियों में **वृक्ष, पेड़, तरु** और **विटप** शब्द पेड़ के अर्थ में प्रयुक्त हुए हैं।
❖ यद्यपि व्युत्पत्ति और रचना की दृष्टि से इन विभिन्न शब्दों का अलग-अलग महत्त्व है, परन्तु मोटे तौर पर ये शब्द समान अर्थ प्रकट करते हैं। इनके अलावा भी भाषा में अनेक शब्द ऐसे पाये जाते हैं, जो एक ही अर्थ देते हैं।
❖ ऐसे शब्द जो परस्पर समान अर्थ का बोध कराते हैं, **पर्यायवाची शब्द** कहलाते हैं।

महत्त्वपूर्ण पर्यायवाची शब्दों के परीक्षोपयोगी उदाहरण

पर्यायशब्द	पर्यायवाची
	'अं' एवं 'अ' से बनने वाले पर्यायवाची
अंचल	इलाका, चकला, चक्र, जनपद, जमीन, मंडल, हलका।
अंगद	भुजबंध, बाजूबंद, बालितनय, तारेयब, बालिपुत्र।
अंगीकरण	स्वीकारोक्ति, स्वीकार, आत्म स्वीकृति, मंजूर, अंगीकार।
अंतरंग	अंदरूनी, अभिन्न, अभ्यंतर, आंतरिक, घनिष्ठ, दोस्ताना, भीतरी, मैत्रीपूर्ण, हार्दिक।
अंतरिक्ष	आकाश, उच्चाकाश, 'ख', बृहदाकाश, महाकाश, महाव्योम, वायुमंडल।
अंतर्धान	अदृश्य, ओझल, गायब, तिरोभूत, तिरोहित, लुप्त।
अंतिम	अपरिवर्तनीय, छोरस्थ, निर्धारित, पश्चतम।
अंदाज़	अटकल, अनुमान, तखमीना, ढब, तर्ज़, तौर-तरीका।
अंदेशा	चिन्ता, खटका, खतरा, सन्देह, दुविधा, पशोपेश, सोच, फिक्र, भय, भास, आशंका , असमंजस।
अंधकार	अँधियारा, अँधेरा, तम, तमस्, तिमिर, ध्वांत, तमिस्र।
अंश	अंग, अवयव, उद्धरण, घटक, चित्रांश, टुकड़ा, पक्ष, भाग, भाज्यांश, शरीर, सहायक, सोपान, हिस्सा।
अंगूठी	मुद्रिका, अंगुलिका, मुँदरी, छल्ला
अंधा	सूरदास, अंध, नेत्रहीन, प्रज्ञाचक्षु, चक्षुहीन
अंगीठी	अंगारिणी, अगियारी, तेमनी, अग्निधान, अलाव।
अंगूठा	अंगुष्ठ, करवीर, ठेंगा, वृद्धांगुलि, हूठा, अंगुश्ते।
अकथनीय	अनभिव्यंजनीय, अनिर्वचनीय, अपरिभाष्य, गोपनीय, चमत्कारपूर्ण, वर्णनातीत।
अकल्याण	अमंगल, अनिष्ट, अशुभ, अहित, खराबी, हानि।
अकस्मात	अनायास, संयोग वंश, सहसा, अचानक, हठात, एकदम।
अकाल	भुखमरी, काल, महंगी, तेजी, दुष्कल, दुर्भिक्ष।

पर्यायशब्द	पर्यायवाची
अकिंचन	अगतिक, अनुपाय, असहाय, कंगाल, गरीब, गुमनाम, दरिद्र, निर्धन, परावलंबी, साधनहीन।
अक्षत	अनुल्लंघित, अभंजित, अविभक्त, कौमार्यवान।
अगाध	अकूत, अगणनीय, अतुल, अत्यधिक, अनुमानातीत, अमित, असीम, निस्सीम, बेशुमार, भावपूर्ण।
अग्नि	अनल, अरुण, अशनि, आँच, आग, कृशानु, जातवेद, ज्वाला, दहन, धनंजय, पवि
अचिर	अल्पजीवी, क्षणभंगुर, क्षणिक।
अचेत	चेतनाशून्य, चेतनाहीन, बेहोश, मूर्च्छित, संज्ञाहीन।
अच्युत	अटल, अनष्ट, अमर, ईश्वर, कृष्ण, परिवर्तनहीन, विष्णु।
अज्ञानी	मूर्ख, अनभिज्ञ, मूढ़, अनजान
अठखेली	हँसी-मज़ाक, कौतुक, उछल कूद, क्रीडा, चुलबुलापन।
अतिरिक्त	अलग, जुदा, न्यारा, पृथक, भिन्न।
अत्याचार	अन्याय, अपकार, अनाचार, नृशंसा, उत्पात, जुल्म।
अत्याचारी	आततयी, जालिम, बर्बर, नृशंस।
अदृश्य	अगोचर, अचाक्षुष, अप्रकट, अप्रत्यक्ष, अन्तर्धान, इंद्रियातीत, रहस्यपूर्ण, पर्देदार।
अधिकार	हक, स्वत्व, दावा, शक्ति, सामर्थ्य, क्षमता।
अध्ययन	अनुशीलन, पढ़ाई, परिशीलन।
अन्वेषक	अनुसंधानकर्ता, आविष्कर्ता, पुरातत्ववेत्ता, वैज्ञानिक।
अनवरतता	लगातार, निरंतर, सतत, शाश्वतता, क्रमबद्धता।
अनिवार्य	अपरिहार्य, परमावश्यक, अत्यावश्यक, अवश्यंभावी।
अनुचित	असंगत, नाजायज, बेजा, गैरमाकूल, गैरवाजिब।
अनुपम	अद्भुत, अद्वितीय, अनूठा, अनूप, अनोखा, निराला, अतुल।
अनुपस्थित	शून्यता, अभाव, अविद्यमानता, गैरमौजूदगी, कमी।
अनुरूप	मिलता-जुलता, सदृश, समान, समरूप, तुल्यरूप।

6 विपरीतार्थक (विलोम) शब्द

- जो शब्द एक-दूसरे के विपरीत अर्थ प्रकट करते हैं, उनको **विलोम शब्द** कहा जाता है।
  जैसे—गुण-अवगुण, धर्म-अधर्म। यहाँ **'गुण'** और **'धर्म'** के विलोम अर्थ देने वाले शब्द क्रमश: **'अवगुण'** व **'अधर्म'** हैं। विलोम शब्द को ही **विपरीतार्थक शब्द** भी कहते हैं।
- भाषा जीवन की अभिव्यक्ति है और जीवन द्वंद्वात्मक है, इसलिए प्रत्येक भाषा में दो विपरीत अर्थों, मंतव्यों को व्यक्त करने के लिए अलग-अलग शब्दों का अस्तित्व रहता है।
- विपरीत भाव को व्यक्त करने के लिए ही **विलोम** (उल्टा) **शब्दों** की जानकारी आवश्यक है।
- हिन्दी में ऐसे विलोम शब्द या तो मूल शब्द के रूप में पहले से ही विद्यमान हैं। जैसे – **दिन-रात, सुख-दुःख, छोटा-बड़ा** उपसर्ग जोड़कर बनने वाले शब्द –
  जैसे- **ज्ञानी-अज्ञानी, अर्थ-अनर्थ** या उपसर्ग बदलकर जैसे–**सक्षम-अक्षम, अनुकूल-प्रतिकूल** बनाए जाते हैं।

उपसर्ग जोड़कर बनने वाले विलोम शब्द

- **कई शब्द उपसर्ग जोड़कर भी बनाए जा सकते हैं** जैसे—आदान-प्रदान, सुलभ-दुर्लभ, आयात-निर्यात, संयाग-वियोग।
- **'अ' उपसर्ग जोड़कर**—सभ्य-असभ्य, न्याय-अन्याय, लौकिक-अलौकिक, हिंसा-अहिंसा, सामान्य-असामान्य।
- **'अप' उपसर्ग जोड़कर**—यश-अपयश, उत्कर्ष-अपकर्ष, मान-अपमान, कीर्ति-अपकीर्ति।
- **'अन्' उपसर्ग जोड़कर**—अंगीकार-अनंगीकार, उत्तरित-अनुत्तरित, अस्तित्व-अनस्तित्व, अभिज्ञ-अनभिज्ञ।
- **'निस्', 'निश्', 'निष्' उपसर्ग जोड़कर**—पाप-निष्पाप, सक्रिय-निष्क्रिय, सशुल्क-नि:शुल्क, सचेष्ट-निश्चेष्ट, तेज-निस्तेज।
- **'निर्' उपसर्ग जोड़कर**—अभिमान-निरभिमान, सापेक्ष-निरपेक्ष, आदर-निरादर, सामिष-निरामिष, सलज्ज-निर्लज्ज।
- **'वि' उपसर्ग जोड़कर**—सम्मुख-विमुख, राग-विराग, देश-विदेश, योजन-वियोजन।
- **'प्रति' उपसर्ग जोड़कर**—आगामी-प्रतिगामी, वादी-प्रतिवादी, घात-प्रतिघात, रूप-प्रतिरूप, आगमन-प्रत्यागमन।
- **'दुर' उपसर्ग जोड़कर**—सुबोध-दुर्बोध, सुव्यवस्थित-दुर्व्यवस्थित, सज्जन-दुर्जन।
- **'दुस्' उपसर्ग जोड़कर**—सत्कर्म-दुष्कर्म, सच्चरित्र-दुश्चरित्र।
- **'कु' उपसर्ग जोड़कर**—सुपात्र-कुपात्र, सुपुत्र-कुपुत्र, सुपाच्य-कुपाच्य, सन्मार्ग-कुमार्ग।
  - ✧ **लिंग परिवर्तन द्वारा**—राजा-रानी, भाई-बहन, वर-कन्या, माता-पिता, नर-नारी, लड़का-लड़की।
  - ✧ **प्रत्ययवत् प्रयुक्त शब्द-परिवर्तन द्वारा**—केन्द्राभिगामी-केंद्रापसारी, गतिवान-गतिहीन।
  - ✧ **नञ् समास द्वारा**—सभ्य-असभ्य, संभव-असंभव, लौकिक-अलौकिक, आदि-अनादि।
  - ✧ **भिन्न शब्द द्वारा**—लाभ-हानि, कटु-मधु, गुरु-लघु, मूक-वाचाल।

विलोम शब्द तालिका

'अ', 'अं' से बनने वाले विलोम शब्दों के उदाहरण

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
अचल	सचल	**अथ**	इति
अनुकूल	प्रतिकूल	**अनंत**	सान्त
अनर्थ	अर्थ (मंगल)	**अचेतन**	सचेतन
अनुराग	विराग	**अनादि**	आदि
अतिवृष्टि	अनावृष्टि	**अग्रज**	अनुज
अनुगामी	प्रतिगामी	**अलभ्य**	लभ्य
अर्वाचीन	प्राचीन	**अबला**	सबला
अमृत	विष	**असीम**	ससीम
अस्थिर	स्थिर	**अपना**	पराया
अपरिचित	परिचित	**अणु**	परमाणु
अर्थी	प्रत्यर्थी	**अध:**	उपरि
अन्विति	अनन्विति	**अकंटक**	कंटकाकीर्ण

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
अगाड़ी	पिछाड़ी	**अग्रगामी**	पश्चगामी
अच्युत	च्युत	**अदृश्य**	दृश्य
अवलंबित	अनवलंबित	**असुविधा**	सुविधा
अनिंदनीय	निन्दनीय	**अभिलषित**	अनभिलषित
अर्हता	अनर्हता	**अतुकांत**	तुकांत
अधिकांश	अल्पांश	**अधिकार**	अनधिकार
अभिमुख	पराङ्मुख	**अधूरा**	पूरा
अनहोनी	होनी	**अभिशाप**	वरदान
अनाहूत	आहूत	**अभ्यंतर**	बाह्य
अभ्यस्त	अनभ्यस्त	**अनित्य**	नित्य
अनुकूल	प्रतिकूल	**अमावस्या**	पूर्णिमा
अमीर	गरीब	**अनुनासिक**	निरनुनासिक

7 अनेकार्थक शब्द

❖ जिन शब्दों से एक से अधिक वस्तुओं का बोध होता है, उन्हें **अनेकार्थक** शब्द कहते हैं तथा इनके अलग-अलग प्रयोगों से विभिन्न अर्थ प्राप्त किये जा सकते हैं। कुछ महत्वपूर्ण अनेकार्थक शब्दों के उदाहरण निम्न हैं—

शब्द	अनेकार्थक
'अ', 'आ', 'इ', 'ई' से निर्मित अनेकार्थक शब्द	
अंक	गोद, भाग, संस्करण, आलिंगन, अंक
अंग	अंश, अवयव, सहायक, देह।
अंतर	भिन्नता, अंत:करण।
अंब	माता दुर्गा, आम का फल, आम का वृक्ष।
अंबक	तांबा, पिता, आँख।
अक्ष	आँख, ज्ञान, सर्प, मंडल।
अतिथि	मेहमान, साधु, यात्री, अग्नि।
अरुण	सूर्य, लाल, सूर्य का सारथी।
आपत्ति	एतराज, विपत्ति।
अचल	निश्चल, अटल, पहाड़।
अज	बकरा, ब्रह्मा, विष्णु, शवि, दशरथ के पिता, कामदेव।
अदिति	पृथ्वी, प्रकृति, देवताओं की माता।
अनन्त	असीम, आकाश, शेषनाग, विष्णु।
अधर	होंठ, अतंरिक्ष, तुच्छ।
अब्द	बादल, वर्ष।
अब्ज	कमल, चन्द्रमा, कपूर।
अरब	इन्द्र, घोड़ा, सौ करोड़।
अरस	आलस्य, आकाश, महल नीरस।
अलि	भौंरा, कोयल, कौवा, बिच्छु, कुत्ता, सखी, मदिरा।
अमृत	मुक्ति, घी, अन्न, जल, सोना, सुधा, पारा।
अर्क	आसव, इन्द्र, सूर्य, विष्णु, ताँबा, आक।
अरुण	लाल, सिन्दूर, रक्त, सूर्य, केसर।
अरुण	लोचन, लाल नेत्र, कोकिल, कबूतर।
अर्थ	धन, आशय, इन्द्रियों के विषय हेतु।
अवस्था	उम्र, गति, दशा।
अक्ष	पहिए की धुरी, आँख, सूर्य, सर्प, चौसर के पासे, पहिया,।
अक्षत	क्षतहीन, समूचा, कल्याण, हिजड़ा, अखंडित चावल, लावा, जौ, धान्य।
अक्षर	ब्रह्म, वर्ण, गगन, धर्म, सत्य, अविनाशी।
अतिथि	साधु, यात्री, कुश का बेटा, यज्ञ में सोमलता लाने वाला।
अनंत	आकाश, शेषनाग, विष्णु।
अनघ	सुंदर, अर्जुन, पापहीन, शोकहीन।
अपेक्षा	इच्छा, आवश्यकता, आशा, बनिस्बत।

शब्द	अनेकार्थक
अब्ज	कपूर, कमल, धन्वंतरि, शंख, चंद्रमा।
अवतंस	भूषण, टीका, मुकुट, बाली, श्रेष्ठ, व्यक्ति, दूल्हा।
अवली	पूर्ण स्वरग्राम, शृंखला, समूह।
आत्मा	बुद्धि, जीवात्मा, ब्रह्मा, देह, पत्र, वायु।
आदित्य	सूर्य, देव, मित्र, सविता, विष्णु, 12 की संख्या, मदार, वरुण, भग, विष्णु का वामन अवतार।
आम	आम का फल, सर्वसाधारण, मामूली, आँव
आत्मज	कामदेव, पुत्र।
इला	भूमि, गाय, सरस्वती, वैवस्वत मनु की कन्या, बुध की पत्नी और पुरुरवा की माता।
'उ', 'ऊ' से निर्मित अनेकार्थक शब्द	
उद्गाय	विष्णु, सूर्य, प्रशंसा।
उपस्कर	अलंकार, फर्नीचर।
ऊर्मि	लहर, पीड़ा।
उत्तर	जवाब, बदला, पश्चात्ताप, उत्तर दिशा।
'ओ', 'औ', 'ऋ' से निर्मित अनेकार्थक शब्द	
ओस	गोद, शरण, जमीकंद, बहाना, गोला।
ऋक्ष	नक्षत्र, भालू, शौनक वृक्ष, रैवतक पर्वत का एक अंश।
ऋत	आदित्य, यज्ञ, सत्य, मोक्ष, वृत्ति-विशेष।
'क', 'ख', 'ग' से निर्मित अनेकार्थक शब्द	
कंज	अमृत, ब्रह्मा, सिर के बाल, कमल।
कंट	काँटा, विघ्न, रोमांच, कवच।
कटक	कंकण, कड़ा, समूह, सोना, नितम्ब।
कंठ	गला, किनारा, स्वर।
कंदल	कोपल, सोना, कलह।
कंक	सफेद, चील, यम, क्षत्रिय, युधिष्ठिर का छद्म नाम।
कंज	कमल, ब्रह्मा, अमृत, केश।
कनक	सोना, धतूरा, गेहूँ, पलाश, वृक्ष।
कर्ण	कुंती-पुत्र, कान, पतवार, समकोण, त्रिभुज में सबसे बड़ी भुजा।
कल	बीता हुआ दिन, सुंदर, चैन या शांति, पुर्ज़ा, मधुर ध्वनि, अंश, कार्य करने का कौशल।
कुंभ	घड़ा, हाथी का मस्तक।

8 शब्द-युग्म

- ❖ भाषा में कुछ शब्द ऐसे होते हैं, जिनका उच्चारण कुछ मिलता-जुलता होता है और धीरे-धीरे उनका उच्चारण एक जैसा होने लगता है।
- ❖ ये शब्द अर्थ की दृष्टि से सर्वथा भिन्न होते हैं। अत: इनका शुद्ध प्रयोग जानना आवश्यक है अन्यथा समझने में या लेखन में त्रुटि हो सकती है।
- ❖ वे शब्द जिनका उच्चारण प्राय: समान होता है; परन्तु उनके अर्थ में भिन्नता होती हैउन्हें **'शब्द-युग्म'** कहते हैं।
- ❖ युग्म-शब्दों के सम्बन्ध में विशेष बात यह है कि ये उच्चारण में लगभग एक जैसे प्रतीत होते हैं, किन्तु लिपि रूप में जब इनको पढ़ा जाता है तो भिन्नता दृष्टिगोचर होने लगती है।
- ❖ उदाहरण के लिए **'आदि'** और **'आदी'** शब्द हैं। यदि इनको केवल सुना जाएगा तो लगेगा कि दोनों का अर्थ एक ही है; किन्तु यदि इन्हें पढ़ा जाएगा तो भिन्न अर्थ की प्रतीति स्वतः हो जाएगी। अतः **'आदि'** का अर्थ 'वगैरह' और 'आदी' का अर्थ 'आदत वाला' उभरकर सामने आ जाता है।

शब्द-युग्मों के परीक्षोपयोगी उदाहरण

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
'अ', 'आ' से निर्मित शब्द-युग्मों के उदाहरण			
अगम	– दुर्लभ	अचर	– स्थावर
आगम	– शास्त्र	अचिर	– नवीन
अपेक्षा	– स्थावरन	अशक्त	– शक्तिहीन
उपेक्षा	– आवश्यकता	आसक्त	– मोहित
अक्ष	– धुरी	अनु	– पश्चात्
अक्षि	– आँख	अणु	– कण
अंब	– माता	अंतर	– फर्क, भेद
अंबु	– जल	अनंतर	– बाद में
आर्त	– दु:खी	अजर	– देवता
आर्द्र	– गीला	अजिर	– आँगन
अनल	– आग	अथक	– बिना थके
अनिल	– हवा	अकथ	– न कहने योग्य
अभिहित	– कहा हुआ	अगद	– निरोग
अविहित	– अनुचित	अंगद	– बालि का पुत्र
अवंद्य	– निंदनीय	आसक्त	– विरक्त
अवध्य	– नहीं वध करने योग्य	अशक्त	– शक्तिहीन
अगत	– न गया हुआ	अगर	– धूपबत्ती, यदि
आगत	– आने वाला	अग्र	– आगे
अनावर्त	– न दोहराया हुआ	अनाचार	– अयोग्य आचरण
अनावृत्त	– न ढका हुआ	अत्याचार	– बुरा आचरण
अजन	– जन रहित	अपलक	– टकटकी लगाकर
अंजन	– काजल	अपलोक	– अपवाद, बदनामी
अवयव	– अंग	अवधूत	– साधु, संन्यासी
अव्यय	– अविकारी शब्द	अधूत	– निडर
अस्व	– धनहीन	अस्ति	– है (अस्तित्वमान)
अश्म	– पत्थर	अस्थि	– हड्डी
असाध	– कठिन	अशौच	– अशुद्ध
असाधु	– दुष्ट	अशोच	– बिना सोच के
अभिमान	– घमंड	अभार	– भारहीन
अभियान	– सन्नद्ध होना, पढ़ाई	आभार	– कृतज्ञता
आसन	– बैठने की जगह	आहुत	– यज्ञ
आसान	– सरल	आहूत	– आमंत्रित
आभरण	– आभूषण	आश्रय	– सहारा
आवरण	– पर्दा	आश्रम	– तपोवन कुटिया
'इ', 'ई', 'उ' से निर्मित शब्द-युग्मों के उदाहरण			
इड़ा	– पृथ्वी/नाड़ी	इतर	– भिन्न
ईडा	– स्तुति	इत्र	– सुगंधित द्रव्य
इंदिरा	– लक्ष्मी	ईति	– दैवी प्रकोप
इंद्रा	– इंद्र की पत्नी	इति	– समाप्त
उद्यत	– तैयार	उपकार	– भलाई
उद्धत	– शैतान/उद्दण्ड	अपकार	– बुराई
उर	– हृदय	इंदु	– चंद्रमा
उरु	– जाँघ	इंदुर	– चूहा
उत्पात	– उपद्रव	उपल	– पत्थर
उत्पाद	– उत्पन्न किया हुआ	उत्पल	– कमल
'ए', 'ओ' से निर्मित शब्द-युग्मों के उदाहरण			
एकदा	– एक बार	ओटना	– बिनौले अलग करना
एकधा	– एक प्रकार	औटना	– खौलना
ओर	– तरफ	अंश	– भाग
और	– तथा	अंस	– कंधा
'क', 'कं' से निर्मित शब्द-युग्मों के उदाहरण			
किला	– गढ़	कुच	– स्तन
कीला	– खूँटा	कूच	– प्रस्थान
कृपण	– कंजूस	कंच	– काँच
कृपाण	– तलवार	कंचन	– सुवर्ण
कलश	– घड़ा	कल्प	– अनेक युगों का समय
कुलिश	– हीरा/वज्र	कल्पित	– कल्पना किया गया

9 संज्ञा शब्दों से विशेषण बनाना

संज्ञा [Noun]

❖ नाम को संज्ञा कहते हैं। संज्ञा वह विकारी शब्द है जिससे किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या गुण का बोध हो।

❖ ये विकारी शब्द होते हैं तथा **'लिंग', 'काल', 'वचन', 'पुरुष'** आदि के प्रभाव से इनके रूप में परिवर्तन होता रहता है।

❖ **'वस्तु', 'भाव', 'गुण', 'स्थान', 'व्यक्ति'** आदि के आधार पर संज्ञा के भेद निम्न हैं—

(1) व्यक्तिवाचक संज्ञा (Proper Noun)
(2) जातिवाचक संज्ञा (Common Noun)
(i) द्रव्यवाचक संज्ञा (Material Noun)
(ii) समूहवाचक संज्ञा (Collective Noun)
(3) भाववाचक संज्ञा (Abstract Noun)

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा

❖ जो संज्ञा शब्द किसी **व्यक्ति विशेष, वस्तु विशेष** या **स्थान विशेष** का बोध या ज्ञान कराते हैं उन्हें व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।
जैसे–महाभारत, वेद, दिल्ली, राम, मोहन, ताजमहल आदि एवं देशों, व्यक्तियों, शहरों, नदियों, पर्वतों, पुस्तकों, त्योहारों, दिशाओं, समाचार पत्रों, दिनों, महीनों आदि के नाम।

❖ किसी भी **व्यक्ति, प्राणी, वस्तु, स्थान, स्थिति, वर्ग, विचार** एवं **भाव** के नाम का परिचय कराने वाले शब्दों को संज्ञा कहते हैं। व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ बहुधा अर्थहीन होती हैं। इनके प्रयोग से जिस व्यक्ति का बोध होता है उसका प्रायः कोई भी धर्म इनसे सूचित नहीं होता।

❖ जैसे—'कमलेश' शब्द का अर्थ लक्ष्मी का स्वामी अर्थात् 'विष्णु' होता है लेकिन जिस व्यक्ति का इस नाम से बोध हो वह विष्णु हो, यह आवश्यक नहीं है।

❖ ऐसे ही 'मीनाक्षी' शब्द का अर्थ 'मीन जैसे नेत्र वाली' है। किसी महिला का नाम मीनाक्षी होने से उसका अर्थ यह आवश्यक नहीं है कि वह मीन जैसे सुंदर नेत्र वाली हो।

❖ व्यक्तिवाचक संज्ञा किसी व्यक्ति की पहचान या सूचना के लिए केवल एक संकेत मात्र होता है। हालांकि कुछ व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ अर्थवान भी होती हैं।
जैसे—ईश्वर, परमात्मा, ब्रह्माण्ड आदि। व्यक्तिवाचक संज्ञा के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं—

❖ **'रमेश और सुरेश' शताब्दी रेल द्वारा मेघालय घूमने गए। वहाँ उन्होंने शिलांग और चेरापूंजी की सैर की। वहाँ मूल रूप से खासी और गारो जनजाति के लोग रहते हैं। वहाँ सिमासांग, मावपा, दिगारु व बारापानी नामक नदियाँ बहती हैं।**

❖ उपरोक्त उदाहरण में **रमेश, सुरेश, शताब्दी, मेघालय, शिलांग, चेरापूंजी, खासी, गारो, दिगारू व बारापारी** आदि किसी व्यक्ति, वस्तु व स्थान के नामों की ओर संकेत दे रहे हैं।

❖ उपरोक्त वाक्यों में महेश व मोहन व्यक्तियों के नाम हैं, तथा 'लखनऊ' व 'दिल्ली' शहरों के नाम हैं।

❖ 'गोमती' नदी का नाम है। घोड़ा तथा मनुष्य, जानवर तथा आदमियों की जाति विशेष बताने वाले शब्द हैं। जैसे—
(1) **गाय** एक उपयोगी पशु है।
(2) **महेश** के पिता मुम्बई में निवास करते हैं।
(3) **महेश** का घर **दिल्ली** में है।
(4) **मोहन घोड़े** की सवारी कर रहा है।
(5) **लखनऊ गोमती** नदी के किनारे पर बना हुआ है।
(6) **क्रोध** मनुष्य को पागल कर देता है।

संज्ञा को पहचानने के विशेष नियम

(1) संज्ञा शब्द प्राणीवाचक या अप्राणीवाचक हो सकते हैं।
जैसे–लड़का, चिड़िया, गाय आदि प्राणीवाचक हैं तथा दुकान, दाल, पहाड़ आदि अप्राणीवाचक हैं।

(2) संज्ञा शब्द गणनीय व अगणनीय हो सकते हैं जैसे –
लड़का, सेब आदि गणनीय संज्ञाएँ हैं जबकि, हवा, क्रोध, पानी आदि अगणनीय संज्ञाएँ हैं।

(3) संज्ञा पद वाक्य में कर्ता, कर्म, पूरक आदि की भूमिका निभा सकता है। जैसे –
महेश पढ़ रहा है। (कर्ता के रूप में)
उसने मोहन को पढ़ाया। (कर्म के रूप में)

(4) संज्ञा पद के बाद परसर्ग आ सकते हैं।

(5) संज्ञा से पूर्व विशेषणों का प्रयोग हो सकता है जैसे –
काली गेंद, सफेद गाय, छोटा कपड़ा, लम्बा चाकू आदि।

❖ व्यक्तिवाचक संज्ञा के अन्तर्गत आने वाले
व्यक्ति, वस्तु, स्थान, गुण, भाव आदि शब्दों की सूची—

✧ **स्त्री–पुरुषों के नाम**—जैसे—आरती, मीरा, सोनल, दीपिका, सीमा, राधा, लक्ष्मी, महेश, सुरेश, गणेश, दीपक, नर्मदा, जयप्रकाश, मीरा सुशीला, सुदामा, मीनाक्षी, नीतू, प्रतिभा, गीतांजलि, राजू, मोहन, रमेश, लता आदि।

✧ **देशों के नाम**—जैसे—भारत, म्यांमार, चीन, भूटान, जर्मनी, ब्राजील, रूस, मालदीव, श्रीलंका, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, अमेरिका, जापान, इटली, बर्मा, बांग्लादेश, नेपाल, जयपुर, इंग्लैण्ड, मुम्बई, काशी, वृंदावन, आदि।

10 शब्द-शुद्धि

अशुद्ध शब्दों का शुद्धीकरण और शब्दगत अशुद्धि का कारण

- ❖ हिन्दी भाषा एक समृद्ध, परिपूर्ण और वैज्ञानिक भाषा है तथापि व्याकरण की दृष्टि से इसे अपनी मूल भाषा संस्कृत पर आश्रित रहना पड़ता है। संस्कृत व्याकरण का हिन्दी में पर्याप्त प्रयोग होता है और जहाँ व्याकरण के नियमों में थोड़ी भी शिथिलता बरती जाती है वहाँ अशुद्धियाँ शुरू हो जाना स्वाभाविक है।
- ❖ भौगोलिक, शैक्षणिक और भाषान्तर सम्पर्क से भाषा में उच्चारण तथा लेखन सम्बन्धी अशुद्धियाँ हो जाती हैं।
- ❖ व्याकरण से सम्बन्धित प्रमुख अशुद्धियाँ **स्वर, व्यंजन, वचन, लिङ्ग, अनुस्वार, विभक्ति** आदि के अनुचित प्रयोग से हो जाती हैं। इन त्रुटियों के कारण भाषा की प्रभावशीलता नष्ट हो जाती है और तब ही भाषा अपनी सम्प्रेषणीयता के महत्त्व को खोने लगती है। फिर वह भाषा साहित्यिक उपयोग के लिए अनुपयुक्त मानी जाती है।
- ❖ किसी भी स्थायी साहित्य के लिए शुद्ध भाषा अनिवार्य है। अत: भाषाविदों को सर्वप्रथम भाषा सम्बन्धी दोष दूर करना चाहिए।
- ❖ भाषा सम्बन्धी अशुद्धियों से बचना ज़रूरी है। ऐसे शब्द अथवा पद जिनमें अशुद्धियों की अधिक सम्भावना रहती है।

1. दीर्घ वर्ण को लघु वर्ण की तरह उच्चारित करने पर होने वाली अशुद्धि के उदाहरण—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
पत्नि	पत्नी	कौशल्या	कौशल्या
श्रीमति	श्रीमती	गोतम	गौतम
प्रोढ़	प्रौढ़	गोरव	गौरव
अक्षोहिणी	अक्षौहिणी	दिपावली	दीपावली
अनसुया	अनसूया	दिया	दीया
सुई	सूई	नुपुर	नूपुर
अहार	आहार	वधु	वधू
इंदोर	इंदौर	जरुरत	जरूरत
एश्वर्य	ऐश्वर्य	कोतुक	कौतुक
शुश्रुषा	शुश्रूषा	निरोग	नीरोग
कोमुदी	कौमुदी	शताब्दि	शताब्दी

2. अनावश्यक रूप से 'इ' का स्वर जोड़ने पर होने वाली अशुद्धि के उदाहरण—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
कवियित्री	कवयित्री	तिरिस्कार	तिरस्कार
रचियता	रचयिता	द्वारिका	द्वारका
अहिल्या	अहल्या	फिजूल	फजूल
छिपकिली	छिपकली	वापिस	वापस
प्रदर्शिनी	प्रदर्शनी	शिखिर	शिखर
सिंहिनी	सिंहनी	परिणित	परिणत

3. 'इ', 'उ' का स्वर आवश्यक होते हुए भी उसे विलोपित करने पर होने वाली अशुद्धि के उदाहरण—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
पड़ोसन	पड़ोसिन	साँपन	साँपिन
बंजारन	बंजारिन	सरोजनी	सरोजिनी
भगनी	भगिनी	हिरण्यकश्यप	हिरण्यकशिपु
मैथलीकरण	मैथिलीकरण	इंदरा	इंदिरा
युधिष्ठर	युधिष्ठिर	उज्जयनी	उज्जयिनी

4. हिन्दी में कुछ शब्द दोनों रूपों में प्रचलित हैं एवं दोनों ही रूपों में हमेशा शुद्ध रहते हैं।

विशेष नियम के उदाहरण

शुद्ध	शुद्ध	शुद्ध	शुद्ध
मनोरंजन	मनरंजन	मुसकान	मुस्कान
अँगरेजी	अंग्रेजी	आधिक्य	अधिकता
क्रोधित	क्रुद्ध	एकता	ऐक्य
वर्दी	वरदी	समता	साम्य
हलवा	हलुआ	बसंत	वसंत
एकत्रित	एकत्र	कुंवर	कुँवर
मध्यान्ह	मध्याह्न	सोसायटी	सोयाइटी

5. ✧ **वर्गोत्तर व्यंजन ('य', 'र','ल', 'व', 'श', 'ष', 'स', 'ह') के लिए केवल अनुस्वार का प्रयोग होता है।**
जैसे—किंवदन्ती, संयम, हंस, संशय, संवाद, संरक्षण।

✧ वर्गोत्तर में अनुस्वार के स्थान पर पंचम वर्ण का प्रयोग करने से शुद्ध अशुद्ध हो जाता है। जैसे—सन्सार (अशुद्ध), हन्स (अशुद्ध)

✧ **निम्न शब्दों में वर्गीय व्यंजन होने पर भी पंचम वर्ण का प्रयोग ही शुद्ध होगा, उनके स्थान पर अनुस्वार स्वीकार्य नहीं है।**
जैसे—अम्मा, उन्नति, गन्ना, वाङ्मय, सम्मुख, सम्मति व धन्वन्तरि (धन्वंतरी)

✧ **संधि करते समय मूर्धन्य ध्वनि पर 'न' वर्ण 'ण' वर्ण में बदल जाता है।**
जैसे—राम+अयन = रामायण (यहाँ 'र' मूर्धन्य ध्वनि है।)
ऋ+न = ऋण (यहाँ 'ऋ' मूर्धन्य ध्वनि है।)

✧ **निम्न शब्दों में 'ण' वर्ण का ही प्रयोग होता है, इसके स्थान पर 'न' लिखने से शब्द अशुद्ध हो जाता है।**
जैसे—शरण, मरण, चरण, रण, हरण, हरिण, भीषण, फण, रमण, भ्रमण, अनुकरण, लक्ष्मण, संचरण, संस्करण, विकिरण, प्रसारण, आभूषण, दर्पण, आकर्षण, विकर्षण, प्रणाम, प्रमाण, कृपाण

6. संधि नियमों की उपेक्षा से होने वाली अशुद्धियाँ।
जैसे— अभि+अर्थी=अभ्यर्थी। परन्तु कुछ लोग इसे अभ्यार्थी उच्चारित करते हैं, जो गलत है।

11 वाक्य-शुद्धि

अशुद्ध वाक्यों का शुद्धीकरण और वाक्यगत अशुद्धि का कारण

वाक्य के अंग एवं प्रकार

वाक्य रचना

- ❖ वाक्य की रचना मूलतः पदों से होती है। ये पद **संज्ञा, सर्वनाम, विश्लेषण, क्रिया** तथा **अव्यय** होते हैं।
- ❖ कभी-कभी पदों से पदबंध की रचना होती है और वाक्य की रचना में ये **पदबंध, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रियाविशेषण** आदि के रूप में आते हैं।
- ❖ उपर्युक्त बातें सरल वाक्य की रचना में मिलती हैं जिसमें उद्देश्य और एक विधेय होता है।
- ❖ संयुक्त और मिश्रित वाक्य में दो या अधिक सरल वाक्य इस प्रकार जोड़े जाते हैं कि उनमें एक तो प्रधान उपवाक्य हो जाता है और शेष आश्रित उपवाक्य रहते हैं।
- ❖ संयुक्त वाक्य में सरल वाक्य इस प्रकार जोड़े जाते हैं कि कोई भी उपवाक्य आश्रित नहीं होता।

पदक्रम

- ❖ 'पदक्रम' का अर्थ है **'वाक्य में पदों के रखे जाने का क्रम'**। 'पद' को 'शब्द' कहने के कारण कुछ लोग 'पदक्रम' को 'शब्दक्रम' भी कहते हैं। हर भाषा के वाक्य में पदों या शब्दों के अपने क्रम होते हैं। उदाहरण के लिए अंग्रेजी में कर्ता + क्रिया + कर्म + (Ram killed Mohan) का क्रम है तो हिन्दी में कर्ता + कर्म + क्रिया (राम ने मोहन को मार डाला)।
  यहाँ हिन्दी वाक्यों में पदक्रम पर विचार किया जा रहा है।

वाक्य रचना सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण नियम

(1) कर्ता वाक्य में पहले और क्रिया प्रायः अन्त में होती है—**मोहन गया, लड़का दौड़ा**। यों बल देने के लिए क्रम उलट भी सकते हैं। **गया** वह लड़का, **पास** हो चुके तुम।

(2) कर्ता का विस्तार उसके पहले तथा क्रिया का विस्तार कर्ता के बाद आता है—**राम का लड़का मोहन गाड़ी से अपने घर गया।**

(3) कर्म तथा पूरक कर्ता और क्रिया के बीच में आते हैं—राम ने **पुस्तक** ली। यदि दो कर्म हों तो गौण कर्म पहले तथा मुख्य कर्म बाद में आता है—राम ने **मोहन को पत्र लिखा**।

- ❖ कर्म तथा पूरक के विस्तार उनके पूर्व आते हैं—राम ने अपने **मित्र के बेटे** राजीव को **बधाई का** पत्र लिखा, मोहन **अच्छा** डॉक्टर है। बल देने के लिए कर्म पहले भी आ सकता है—पुस्तक ले ली **तुमने** ?

(4) विशेषण प्रायः विशेष्य के पूर्व आते हैं—**तेज** घोड़े को इनाम मिला, **अकर्मण्य** विद्यार्थी फेल हो गया। पूरक विशेषण विशेष्य के बाद आता है— राम **लम्बा** है। यह केवल तब होता है जब क्रिया 'है', 'था', 'होगा' आदि हो।

- ❖ कई विशेषण हों तो संख्यावाचक पहले आता है—मैंने **एक लम्बा काला** आदमी देखा। सामान्यतः विशेषण क्रिया के पहले अवश्य आ जाता है; किन्तु कभी-कभी क्रिया के बाद में अर्थात् वाक्यांत में भी आता है—**चाहे कुछ भी कहो भाई, है वह सुन्दर।**

(5) क्रियाविशेषण प्रायः कर्ता और क्रिया के बीच में आते हैं—बच्चा धीरे-धीरे खा रहा है।

- ❖ कालबोधक क्रियाविशेषण कभी-कभी ज़ोर देने के लिए कर्ता के पहले भी आता है—अब मैं जा रहा हूँ—मैं **अब** जा रहा हूँ।
- ❖ स्थानबोधक की भी प्रायः यही स्थिति है—**भारत के उत्तरी भाग में** कश्मीर है—कश्मीर **भारत के उत्तरी भाग में** है।
- ❖ दोनों साथ भी प्रारम्भ में आ सकते हैं—**आज उस हॉल में** कवि-सम्मेलन हो रहा है।
- ❖ क्रियाविशेषण कर्ता और कर्म के बीच में तो आता है (मैं **धीरे-धीरे** उसे सिखा रहा हूँ, लड़का **चुपके-चुपके** तैयारी कर रहा है।)
- ❖ अपवादतः क्रियाविशेषण अन्यत्र भी आ सकता है— चलो चलें **अब**; आ गए फिर यहीं ?
  शीघ्र ही मैं आऊँगा—मैं **शीघ्र** ही आऊँगा—मैं आऊँगा **शीघ्र** ही।

(6) सर्वनाम प्रायः संज्ञा के स्थान पर आता है; किन्तु दो बातें ध्यान देने की है—

1. सर्वनाम वाक्य में संबोधन के रूप में नहीं आता,
2. विशेषण सर्वनाम के पहले न आकर प्रायः बाद में आता है—वह अच्छा है, तुम मूर्ख हो। यों बोलचाल में बल देने के लिए कभी-कभी विशेषण को सर्वनाम से पहले भी ला देते हैं—**अच्छा** वह है मगर..., **मूर्ख** तुम हो वह नहीं।

- ❖ यहाँ दूसरे में बल 'तुम' पर है पर साथ ही 'मूर्ख' पर भी बल है। यों ऐसे प्रयोगों में मूल वाक्य 'वह अच्छा है' 'तुम मूर्ख हो' ही होता है अर्थात् विशेषण पूरक या विधेयक विशेषण ही रहता है।

(7) हिन्दी में क्रिया सामान्यतः अन्त में आती है—मैं **चला**, मैं अब **चला**; किन्तु बल देने के लिए वह आरम्भ में आ सकती है—**चला** मैं; चला अब मैं।

12 वाच्य
(कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य प्रयोग)

❖ क्रिया के जिस रूपांतर से यह जाना जाए कि क्रिया द्वारा किए गए विधान (कही गई बात) का विषय कर्ता है, कर्म है या भाव उसे **'वाच्य'** कहते हैं।

वाच्य के भेद

1. कर्तृवाच्य 2. कर्मवाच्य 3. भाववाच्य

1. कर्तृवाच्य

❖ जिस वाक्य में वाच्य बिंदु 'कर्ता' है, उसे **कर्तृवाच्य** कहते हैं।

❖ **अकर्तृवाच्य**-जिन वाक्यों में कर्ता गौण अथवा लुप्त होता है, उन्हें अकर्तृवाच्य कहते हैं।

अकर्तृवाच्य के भेद—✧ कर्मवाच्य ✧ भाववाच्य

जैसे—राम रोटी खाता है। कविता गाना गाएगी। वह व्यायाम कर रहा है।

ध्यातव्य—कर्तृवाच्य में सकर्मक और अकर्मक दोनों ही प्रकार की क्रियाओं का प्रयोग होता है।

कर्तृवाच्य से संबंधित उदाहरण

✧ मंधाना नहीं पढ़ती है।
✧ प्रेमचंद ने गबन लिखा।
✧ श्रद्धालु काशीवासी इस सभा का आयोजन करते हैं।
✧ समर्थकों ने पुष्पवर्षा की।
✧ आप उनके विषय में क्या सोचते हैं।
✧ उन्होंने कैप्टन की देशभक्ति का सम्मान किया।
✧ परीक्षा के बारे में अध्यापक ने क्या कहा?
✧ चलो आज मिलकर कहीं घूमते हैं।
✧ महादेवी ने 'यामा' लिखी।
✧ कृष्ण ने गीता का रहस्य समझाया।

2. कर्मवाच्य

❖ जहाँ वाच्य-बिंदु कर्ता न होकर 'कर्म' हो, वहाँ कर्मवाच्य होता है। इन वाक्यों में या तो कर्ता का लोप हो जाता है, या उसके साथ 'से' या 'के द्वारा' का प्रयोग होता है।

जैसे—(1) ''रोटी राम से खाई जाती है।'' (2) कविता से गाना गाया जाएगा। (3) उससे व्यायाम किया जा रहा है।

ध्यातव्य—कर्मवाच्य में सकर्मक क्रिया का ही प्रयोग होता है, अकर्मक क्रिया का नहीं, क्योंकि अकर्मक क्रिया का कर्म होता ही नहीं।

✧ इस वाक्य में वाच्य-बिंदु 'दूध' (कर्म) है।
अतः यह कर्मवाच्य का वाक्य है।

अन्य उदाहरण—

✧ पतंग बहुत अच्छी तरह उड़ रही है। (कर्ता का लोप)
✧ हमसे सुंदर चित्र देखे गए। (कर्ता + से)
✧ यह उपन्यास प्रेमचंद द्वारा लिखा गया। (कर्ता + द्वारा)

कर्मवाच्य के प्रयोग-स्थल संबंधी नियम

नियम (1)—जब कर्ता का निश्चित रूप से पता न हो या किसी कारणवश उसका उल्लेख न करना चाहते हों। जैसे—
✧ डाकपेटी में चिट्ठी डाल दी गई है।
✧ उसकी घड़ी मेज पर से चुरा ली गई है।

नियम (2)—जब आपके बिना चाहे कोई कर्म अचानक हो गया हो। जैसे—
✧ शीशा गिर गया और टूट गया।
✧ शीशे का गिलास छूट गया।

नियम (3)—जब कर्ता कोई स्वतंत्र रूप से व्यक्ति न हो बल्कि कोई व्यवस्था या तंत्र (सभा, समिति, सरकार आदि हो, या जहाँ व्यक्ति ने जो किया है, वह व्यक्तिगत रूप से नहीं किया है बल्कि पदेन (पद के अनुसार) किया है।) जैसे—
✧ सरकार द्वारा गरीबों के लिए बहुत से काम किए जा रहे हैं।
✧ आपको सूचित किया जाता है कि .....
✧ दंगाग्रस्त लोगों की आर्थिक सहायता पार्टी द्वारा की जा रही है।
✧ रुपये खर्च किए जा रहे हैं।
✧ सभी द्वारा जनहित के अनेक कार्य किए जा रहे हैं।

नियम (4)—सूचना, विज्ञप्ति आदि में जहाँ कर्ता निश्चित नहीं हो।
जैसे—
✧ पटरी पार करने वालों को सजा दी जाएगी।
✧ अभियुक्त को न्यायालय में पेश किया जाए।

नियम (5)—असमर्थता बताने के लिए **'नहीं'** के साथ इसका प्रयोग किया जाता है।
जैसे—
✧ अब अधिक दूध नहीं पिया जाता।
✧ यह खाना हमसे नहीं खाया जाता।
✧ आजकल गरीब की बात नहीं सुनी जाती।
✧ अब अधिक भोजन नहीं खाया जाएगा।
✧ अब तो पत्र भी नहीं लिखा जाता।

कर्मवाच्य से संबंधित अन्य उदाहरण

✧ चित्रकार द्वारा चित्र बनाया जाता है।
✧ राधा द्वारा कढ़ाई की जाती है।
✧ उसके द्वारा भगत को दुनियादारी से मुक्त कर दिया गया।
✧ हमारे द्वारा उसको अच्छे संस्कार देने का प्रयास किया गया।
✧ मंत्री जी द्वारा राहत सामग्री बँटवाई गई।
✧ अनेक श्रोताओं द्वारा कविता की प्रशंसा की गई।

13 क्रिया

सकर्मक, अकर्मक और पूर्वकालिक क्रियाएँ

❖ **धातु (Root)**—यदि किसी एक क्रिया के विभिन्न रूपों को देखा जाए, जैसे—करेगा, कर रहा है, करता है, कर लेगा, कर चुका होगा, करना चाहिए, करिए, करो, करवाइए आदि तो इन सबमें **'कर'** ऐसा अंश है जो सभी क्रिया रूपों में समान रूप से आ रहा है।

❖ इस समान रूप से मिलने वाले अंश को ही क्रिया की धातु कहा जाता है। पढ़ना, लिखना, चलना, हँसना आदि क्रियाओं में पढ़, लिख, चल है सभी धातु रूप हैं।

❖ धातु रूपों में जब 'ना' लग जाता है, जैसे—चलना, फिरना, दौड़ना, भागना तो क्रिया का सामान्य रूप प्राप्त हो जाता है।

❖ वस्तुतः धातु ही क्रिया का मुख्य अर्थ बताने वाला अंश (मुख्य क्रिया) होता है। क्रिया पदबंध में से **'धातु'** के अलावा जो भी अंश शेष बचता है वह सहायक क्रिया का अंश होता है।

❖ वे शब्द, जिनके द्वारा किसी कार्य का करना या होना पाया जाता है उन्हें क्रिया कहते हैं।

❖ वाक्य में जिस शब्द या शब्द समूह के प्रयोग से किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान के बारे में कुछ विधान किया जाता है, वह क्रिया ही है। क्रिया का अर्थ होता है काम का करना या होना।

❖ क्रिया वाक्य का आवश्यक अंग है, इसे विधेय कहा जाता है। जैसे—पीसना, पढ़ना, सोना, फिरना आदि।

❖ **क्रिया (Verb)**—क्रिया वे शब्द (पद) हैं जिनसे किसी कार्य के होने या किए जाने का, किसी घटना या प्रक्रिया के घटित होने का या किसी वस्तु या व्यक्ति की अवस्था या स्थिति का बोध होता है।

उदाहरण—

✧ बच्चे फिल्म देख रहे हैं।
✧ लड़कियाँ खाना बना रही हैं।
✧ मैंने काम कर लिया है।
✧ शीला नौकरानी से खाना बनवा रही है।
✧ मीना बीमार है।

स्पष्टीकरण—उपरोक्त वाक्यों में बिल्ली, शीला, पुस्तक तथा सोहन की स्थिति अथवा अवस्था का ज्ञान हो रहा है। ये सभी व्याकरण में **क्रिया पदबंध** कहलाते हैं।

❖ **सरल क्रिया**—वे क्रिया रूप जो भाषा में रूढ़ शब्दों की तरह से प्रचलित है सरल क्रिया कहे जाते हैं।

सरल क्रिया संबंधी महत्त्वपूर्ण नियम—

नियम (1)—ये क्रियाएँ न तो किसी अन्य क्रिया से व्युत्पन्न हुई हैं और न ही एकाधिक क्रिया रूपों के योग से बनी हैं, अतः इन्हें मूल क्रिया भी कहा जाता है, जैसे – आना, जाना, पढ़ना, लिखना, खाना, पीना आदि।

नियम (2)—सरल क्रियाओं में आने वाली धातुएँ सरल या मूल धातु कही जाती हैं, जैसे – आना, जाना, पढ़ना, लिखना आदि क्रियाओं में आ, जा, पढ़, लिख सरल धातु हैं।

नियम (3)—सरल क्रिया के अंतर्गत अकर्मक तथा सकर्मक दोनों ही प्रकार की क्रियाएँ आ सकती हैं जो अकर्मक तथा सकर्मक धातुओं से बनी होती हैं। कर्म की संभावना के आधार पर ये दो भेद ही होते हैं।

❖ **क्रिया के कर्म, काल एवं रचना के आधार पर भेद**

क्रिया के भेद

(1) सकर्मक क्रिया **(2) अकर्मक क्रिया**
(3) प्रेरणार्थक क्रिया **(4) द्विविधि क्रिया**
(5) अनेकार्थक क्रिया **(6) सहायक क्रिया**
(7) समापिका व असमापिका क्रिया **(8) संयुक्त क्रिया**
(9) पूर्वकालिक क्रिया **(10) नामधातु क्रिया**
(11) तात्कालिक क्रिया **(12) व्युत्पन्न अकर्मक क्रिया**
(13) समस्त क्रिया **(14) संयुक्त क्रिया**
(15) मिश्र क्रिया

1. सकर्मक क्रिया

❖ वह क्रिया जो वाक्य में कर्म की अपेक्षा रखती है अथवा जहाँ पर क्रिया के घटित होने की प्रक्रिया में **कर्म** की आवश्यकता होती ही है उसे **सकर्मक क्रिया** कहते हैं। यह कर्म के बिना घटित नहीं हो सकती है। जैसे – पढ़ना, लिखना, खाना, पीना, लेना, देना।

सकर्मक क्रियाओं हेतु मुख्य नियम

नियम (1)—कर्म का उपस्थित होना

नियम (2)—कर्म के बिना भाव स्पष्ट न होना

नियम (3)—'क्या' प्रश्न (काल्पनिक) करके उसके उत्तर रूप में कर्म की प्राप्ति। जैसे—मोहन बंशी बजाता है।

नियम (4)—बजाता क्रिया का फल कर्म (बंशी) पर है। यहाँ कर्म उपस्थित है। बिना कर्म के ही क्रिया का भाव स्पष्ट नहीं होगा, अतः यह सकर्मक क्रिया है। इसी प्रकार—
मोहन पान **खाता** है।

नियम (5)—वाक्य में पान (कर्म) उपस्थित है तथा क्या खाता है? (काल्पनिक प्रश्न का उत्तर भी प्राप्त होता है।) पान। यदि कर्म 'पान' को हटा दिया जाए तो ''मोहन **खाता** है।'' से अर्थ स्पष्ट नहीं होता है अतः यहाँ खाता सकर्मक क्रिया है।

सकर्मक क्रिया के उदाहरण

✧ राधा खाना **पकाती** है।
✧ राजू चित्र **बनाता** है।
✧ वह अपना सिर **खुजलाता** है।
✧ सुरभि ढोलक **बजाती** है।
✧ मोहन पान **खाता** है।
✧ श्यामा चाय **बना** रही है।

14 वाक्यांश के लिए एक सार्थक शब्द

- **'वाक्य खंड के लिए एक शब्द'** की जानकारी रचनात्मक दृष्टि से परीक्षार्थियों के लिए अत्यन्त आवश्यक है। जहाँ वस्तुनिष्ठ परीक्षाओं में यह भाग प्रत्याशियों को पूर्ण अंक दिलाता है वहीं दूसरी ओर यह अपठित गद्यांश को समझने व निबन्ध रचना में विशेष रूप से सहयोगी है।
- इसके प्रयोग द्वारा रचनाकार कम से कम शब्दों में सरल व सुदृढ़ अभिव्यक्ति कर सकता है जिससे रचना की शैली व भाषा दोनों में निखार आता है।
- इसके अंतर्गत परीक्षार्थी को दिए गए वाक्यांश के लिए उपयुक्त शब्द का चयन चार सम्भावित विकल्पों में से करना होता है—

उदाहरण—जो सबके मन की जानता हो, उसे कहते हैं—

(A) सर्वज्ञ (B) अल्पज्ञ (C) अगोचर (D) अन्तर्यामी **[D]**

हल—स्पष्ट है जो सबके मन की जानता हो, 'अन्तर्यामी' कहलाता है।

- यहाँ कुछ महत्त्वपूर्ण अनेक शब्द अथवा वाक्यांश देकर उनके लिए उपयुक्त शब्द प्रस्तुत किए जा रहे हैं। ये शब्द परीक्षा के लिए तो उपयोगी हैं ही, इनके सम्यक् अनुशीलन से परीक्षार्थी के पारिभाषिक शब्द-ज्ञान में भी वृद्धि होगी।

'अ' से सम्बन्धित वाक्यांश के लिये एक सार्थक शब्द

वाक्यांश	एक शब्द
जिसका इलाज न हो सके	**असाध्य**
जहाँ अनाथ रहते हों	**अनाथालय**
जो व्यक्ति किसी बालक की देखरेख करता है	**अभिभावक**
जो बात कही न जा सके	**अकथनीय**
जिसका जन्म न हो	**अजन्मा**
जिसके पास कुछ न हो	**अकिंचन**
जो कभी तृप्त न होता हो	**अतृप्त**
किसी चीज़ की खोज करने वाला	**अन्वेषक**
सब राष्ट्रों से सम्बन्धित	**अन्तरराष्ट्रीय**
जो अपना प्रभाव दिखाने में न चूके	**अचूक**
जिस पर अभियोग लगाया गया हो	**अभियुक्त**
जिसकी कल्पना न की जा सके	**अकल्पनीय**
जो कभी मरता न हो	**अमर**
एक-एक अक्षर	**अक्षरशः**
जिसके माता-पिता न हों	**अनाथ**
जिसे कभी बुढ़ापा न आये	**अजर**
जो धन का दुरुपयोग करता हो	**अपव्ययी**
जहाँ पहुँचा न जा सके	**अगम्य**
जिसकी कोई उपमा न हो	**अनुपम**
बड़ा भाई	**अग्रज**
जिसका जन्म बाद में हुआ हो	**अनुज**
जो बीत चुका हो	**अतीत**
कानून के विरुद्ध	**अवैध**
जिसके आने की तिथि अज्ञात हो	**अतिथि**
जिसके समान कोई दूसरा न हो	**अनन्य**
जिसकी संख्या सीमित न हो	**असंख्य**

वाक्यांश	एक शब्द
ऊपर चढ़ने वाला	**आरोही**
मन में होने वाला ज्ञान	**अन्तर्ज्ञान**
जिसके आर-पार न देखा जा सके	**अपारदर्शक**
जिसका मूल्य न आँका जा सके	**अमूल्य**
जिसमें धैर्य न हो	**अधीर**
जो पहले कभी न हुआ हो	**अभूतपूर्व**
जो भेदा या तोड़ा न जा सके	**अभेद्य**
जो पहले कभी नहीं सुना गया	**अश्रुतपूर्व**
जिसको क्षमा न किया जा सके	**अक्षम्य**
जिसका कोई शत्रु न हो	**अजातशत्रु**
जिसकी आशा न की गयी हो	**अप्रत्याशित**
जिसको छोड़ा नहीं जा सकता हो	**अत्याज्य**
जिसका उत्तर नहीं दिया जा सके	**अनुत्तरित**
जिसके पास कुछ न हो	**अकिंचन**
जिसे बुलाया न गया हो	**अनाहूत**
जिस पेड़ के पत्ते झड़ गये हों।	**अपत**
जिसे प्रमाण द्वारा सिद्ध न किया जा सके	**अप्रमेय**
जिसका इलाज न हो सके	**असाध्य**
जिस वस्त्र को पहना न गया हो	**अप्रहत**
जिसके समान कोई न हो	**अद्वितीय**
हृदय की बातें जानने वाला	**अन्तर्यामी**
पृथ्वी, ग्रहों और तारों आदि का स्थान	**अन्तरिक्ष**
दोपहर बाद का समय	**अपराह्न**
जिस पुस्तक में आठ अध्याय हों	**अष्टाध्यायी**

15 मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

मुहावरे एवं उनके वाक्य प्रयोग

- मुहावरा एक ऐसे **पदबन्ध** को कहा जाता है जिसका शाब्दिक अर्थ अर्थात् भावार्थ कुछ और ही निकलता है, जैसे—वह चौकन्ना हो गया। इस वाक्य में **'चौकन्ना'** शब्द का अर्थ है **'चार कानों वाला'** परन्तु कोई भी मनुष्य चार कानों वाला नहीं होता है।
- अत: इसका लाक्षणिक अर्थ या भावार्थ लिया जाता है—**'बहुत सावधान।'** ऐसे ही पदबन्धों या वाक्यांशों को मुहावरा कहा जाता है।
- मुहावरा तो वाक्य का अंग बनकर प्रयुक्त होता है, जबकि लोकोक्ति या कहावत स्वयं में एक वाक्य होती है।
- जब भाषा में सामान्य शब्द या अभिधायुक्त शब्द अपना मन्तव्य सही परिप्रेक्ष्य में प्रकट न कर सकें तो मुहावरों के रूप में व्यक्ति लाक्षणिक शब्दावली का प्रयोग करता है। जैसे—
  - ✧ **आँख खुलना**—सावधान होना।
  - ✧ **आड़े हाथों लेना**—खरी-खोटी सुनाना, खूब भड़काना।
  - ✧ **आसमान टूट पड़ना**—आकस्मिक विपत्तियों का आ जाना।
  - ✧ **कमर कसना**—तैयार होना।
  - ✧ **चिकना घड़ा होना**—किसी की बात का कुछ असर न होना।
  - ✧ **लोहा मान लेना**—अधीनता स्वीकार करना।
  - ✧ **दिल के फफोले फूटना**—हृदय के उद्‌गार निकालना।

मुहावरा एवं लोकोक्ति में अन्तर

मुहावरा	लोकोक्ति
मुहावरा एक पूरा वाक्य नहीं होता है।	लोकोक्ति एक पूर्ण वाक्य होता है।
मुहावरे छोटे होते हैं।	लोकोक्तियाँ दीर्घ और भावपूर्ण होती हैं।
मुहावरे के प्रयोग में किसी कथन में चमत्कार उत्पन्न होता है।	लोकोक्ति का प्रयोग किसी सत्य या नीति के आशय को स्पष्ट करता है।
मुहावरे का अस्तित्व स्वतंत्र नहीं होता है। यह किसी वाक्य के अधीन रहकर ही प्रयुक्त हो सकता है।	लोकोक्ति की स्वतंत्र सत्ता होती है और इसके द्वारा किसी कथन की पुष्टि की जाती है।
मुहावरे का प्रयोग भाषा में भाव उदीप्त करने-हेतु किया जाता है	लोकोक्ति का प्रभाव पाठक या श्रोता पर अमिट पड़ता है, क्योंकि लोकोक्ति सत्यता पर आधारित और लोक-चलन के शब्दों में होती है।

मुहावरों का महत्त्व

- आधुनिक युग में मुहावरों का प्रयोग निरन्तर बढ़ता जा रहा है। वास्तव में इनकी सरल, स्वाभाविक एवं सुन्दर अभिव्यंजना में ऐसी मोहक शक्ति छिपी हुई कि कोई भी लेखक अपने को इनके प्रभाव से अछूता नहीं रख सकता।
- कहानियों और नाटकों की लेखन-शैली में तो ये चार-चाँद लगा ही देते हैं, आजकल निबंध-लेखन में भी इनका प्रयोग बढ़ रहा है। अत: विद्यार्थियों के लिए मुहावरों का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है।

मुहावरों के अर्थ और उनके महत्त्वपूर्ण वाक्य प्रयोग

- **अँगारों पर पैर रखना—संकट में पड़ना।**
  वाक्य प्रयोग—डकैतों से दुश्मनी करना आसान नहीं है, अँगारों पर पैर रखना है।
- **अंक भरना—गले लगाना।**
  वाक्य प्रयोग—काली-दह से सकुशल निकले बालक कृष्ण को माँ यशोदा ने अंक में भर लिया।
- **अक्ल के घोड़े दौड़ाना—थोथी कल्पनाएँ करना।**
  वाक्य प्रयोग—अक्ल के घोड़े दौड़ाने से कोई नतीजा नहीं निकलता है, कठोर मेहनत ही काम आती है।
- **अक्ल का दुश्मन—महामूर्ख।**
  वाक्य प्रयोग—कहा जाता है कि कालिदास अक्ल का दुश्मन था क्योंकि, जिस डाली पर बैठा था उसी को काट रहा था।
- **अँगारे उगलना—क्रोध में कटु वचन बोलना।**
  वाक्य वाक्य प्रयोग—मंथरा की बात सुनकर कैकेयी दशरथ के प्रति अँगारे उगलने लगी।
- **अँगूठा दिखाना—समय पर धोखा देना।**
  वाक्य प्रयोग—गवीश ने रुपये देने का वायदा किया था, किन्तु जब मैं माँगने गया तो अँगूठा दिखा दिया।

16 पारिभाषिक शब्दावली अंग्रेजी के पारिभाषिक शब्दों के समानार्थक हिन्दी शब्द

- प्रशासन से सम्बन्धित अंग्रेजी शब्दों के समानार्थक हिन्दी शब्द **'पारिभाषिक शब्द'** होते हैं। इसका अभिधेयार्थ ही ग्रहण किया जाता है। ऐसे शब्दों का लाक्षणिक या व्यंजनात्मक अर्थ में प्रयोग नहीं किया जाता।
- पारिभाषिक शब्द ऐसे शब्दों को कहते हैं जो रसायन, भौतिक, दर्शन, राजनीति आदि विभिन्न विज्ञानों के शब्द होते हैं।
- अर्थ और प्रयोग की दृष्टि से निश्चित रूप से पारिभाषित होने के कारण ही ये शब्द पारिभाषिक शब्द कहे जाते हैं।
- पारिभाषिक शब्दों का अर्थ सीमित होता है। किस शब्द का क्या अर्थ है और उसे कहाँ प्रयुक्त किया जाना है यह सब सुनिश्चित हुआ करता है। पारिभाषिक शब्द के स्थान पर किसी पर्याय या समानार्थी शब्द का प्रयोग नहीं किया जा सकता।
- भारतीय संविधान में हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा के रूप में स्वीकार किया गया है।
- स्वतन्त्रता से पूर्व तक भारत में प्रशासनिक न्यायालय तथा अन्य सरकारी क्षेत्रों में अंग्रेजी भाषा के शब्दों का प्रयोग होता था, परन्तु स्वतन्त्र भारत में अंग्रेजी शब्दों के स्थान पर जो हिन्दी शब्द स्वीकृत और प्रयुक्त किये गये हैं, उन आधिकाधिक शब्दों की सूची दी जा रही है।

पारिभाषिक शब्दावली (अंग्रेजी शब्दों के समकक्ष हिन्दी शब्द)

अंग्रेजी शब्द	पारिभाषिक शब्द
'A' से बनने वाले पारिभाषिक शब्द	
Abandonment	परित्याग
Abate	कम करना/घटाना उपशमन करना
Abbreviation	संक्षेप/संक्षेपण
Abeyance	आस्थगन
Ability	योग्यता
Abnormal	असामान्य
Abolish	समाप्त करना/उन्मूलन करना
Above cited	उपर्युक्त
Above par	औसत से ऊँचा
Abridge	संक्षेप करना
Abrogate	निराकरण करना
Absence	अनुपस्थिति
Abstract	सार
Absurd	अर्थहीन
Abuse	दुरुपयोग
Academic	शैक्षणिक
Academic Council	विद्या-परिषद्
Academic year	शैक्षणिक वर्ष
Academy	अकादमी
Acceptability	स्वीकार्यता
Acceptance	स्वीकृति
Accuracy	यथार्थता/शुद्धता
Accusation	अभियोग
Accuse	अभियोग लगाना
Acknowledge	अभिस्वीकार करना/मानना
Acting	कार्यवाहक/कार्यकारी
Action	कार्यवाही
Active	क्रियाशील
Activities	कार्यकलाप/गतिविधियाँ
Activity	सक्रियता
Adhere	दृढ़ रहना
Adhesive	आसंजक/चिपकने वाला
Adhoc	तदर्थ
Adjourn	स्थगित करना/काम रोकना
Adjournment motion	स्थगन प्रस्ताव
Adjustment	समायोजन
Administer Oath	शपथ दिलाना
Administration of Justice	न्याय प्रशासन
Administration of Ability	प्रशासन योग्यता
'B' से बनने वाले पारिभाषिक शब्द	
Backward classes	पिछड़े वर्ग
Bad conduct	दुराचरण
Bailable offence	जमानती अपराध
Balance	अतिशेष/बाक़ी संतुलन
Balance Sheet	तुलन-पत्र

17 सरल, संयुक्त और मिश्र वाक्यों का हिन्दी में रूपान्तरण और हिन्दी वाक्यों का अंग्रेजी में रूपान्तरण

हिन्दी से अँग्रेजी अनुवाद के महत्वपूर्ण निर्देश—

1. शाब्दिक अनुवाद सही नहीं समझा जाता, इसलिए शब्द के स्थान पर शब्द और वाक्य के स्थान पर वाक्य अनुदित नहीं करना चाहिए।
2. अनुवाद सरल, मुहावरेदार भाषा और स्वाभाविक शैली में करना चाहिए।
3. हिन्दी के वाक्य को अच्छी तरह पढ़कर, उसके मूल आशय को समझकर अँग्रेजी के सरल, मुहावरेदार वाक्य में उसका अनुवाद करना चाहिए।
4. दो भाषाओं के मुहावरों का अन्तर स्पष्टतया समझाना चाहिए।
5. लम्बे वाक्यों का अनुवाद छोटे वाक्य बनाकर करना अच्छा रहता है।
6. अनुवाद आम प्रचलित शब्दों का प्रयोग करते हुए होना चाहिए ताकि अनुवाद की भाषा कृत्रिम, असहज और यांत्रिक नहीं लगे। अनुवाद में अपना प्रवाह होना चाहिए तथा अनुवाद जीवंत (lively) होना चाहिए।
7. अच्छे अनुवाद के लिए हिन्दी शब्दों के पर्यायवाची अँग्रेजी शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

वाक्य के प्रकार

❖ वाक्य अनेक प्रकार के हो सकते हैं। उनका विभाजन हम दो आधारों पर कर सकते हैं—

1. अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद—अर्थ के आधार पर वाक्य के निम्नलिखित आठ भेद हैं—

(i) विधानवाचक—जिन वाक्यों में क्रिया के करने या होने की सूचना मिले, उन्हें विधानवाचक वाक्य कहते हैं, जैसे—मैंने दूध पिया। वर्षा रो रही है। राम पढ़ रहा है।

(ii) निषेधवाचक—जिन वाक्यों से कार्य न होने का भाव प्रकट होता है, उन्हें निषेधवाचक वाक्य कहते हैं, जैसे—मैंने दूध नहीं पिया। मैंने खाना नहीं खाया। तुम मत लिखो।

(iii) आज्ञावाचक—जिन वाक्यों से आज्ञा, प्रार्थना, उपदेश आदि का ज्ञान होता है, उन्हें आज्ञावाचक वाक्य कहते हैं; जैसे—बाजार जाकर फल ले आओ। मोहन तुम बैठ कर पढ़ो।

(iv) प्रश्नवाचक—जिन वाक्यों से किसी प्रकार का प्रश्न पूछने का ज्ञान होता है, उन्हें प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे—सीता तुम कहाँ से आ रही हो ? तुम क्या पढ़ रहे हो ? रमेश कहाँ जाएगा ?

(v) इच्छावाचक—जिन वाक्यों से इच्छा, आशीष एवं शुभकामना आदि का ज्ञान होता है, उन्हें इच्छावाचक वाक्य कहते हैं; जैसे—तुम्हारा कल्याण हो। आज तो मैं केवल फल खाऊँगा।

(vi) संदेहवाचक—जिन वाक्यों में संदेह या संभावना व्यक्त होती है, उन्हें संदेहवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे—शायद शाम को वर्षा हो जाए। वह आ रहा होगा, पर हमें क्या मालूम। हो सकता है राजेश आ जाए।

(vii) विस्मयवाचक—जिन वाक्यों से आश्चर्य, घृणा, क्रोध, शोक आदि भावों की अभिव्यक्ति होती है, उन्हें विस्मयवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे—वाह! कितना सुंदर दृश्य है। हाय! उसके माता-पिता दोनों ही चल बसे। शाबाश!

(viii) संकेतवाचक—जिन वाक्यों में एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया पर निर्भर होता है। उन्हें संकेतवाचक कहते हैं; जैसे—यदि परिश्रम करोगे तो अवश्य सफल होगे। पिताजी अभी आते तो अच्छा होता। अगर वर्षा होगी तो फसल भी होगी। वह **बिलकुल** थक गया है। उतना खाओ, **जितना** पचा सको।

2. रचना के आधार पर वाक्य के भेद—रचना के आधार पर वाक्य के तीन मुख्य भेद हैं—

(i) सरल वाक्य (साधारण वाक्य)
(ii) मिश्रित वाक्य
(iii) संयुक्त वाक्य।

(i) सरल वाक्य

❖ सरल वाक्य में एक ही क्रिया होती है। अतः यह एक ही वाक्य होता है। इसमें उपवाक्य नहीं होते; जैसे—मुझे दिल्ली जाना है। इस वाक्य में एक ही क्रिया—जाने की हो रही है।

❖ परन्तु जब इसके साथ यह भी जोड़ दिया गया कि और फिर परसों वहाँ से कोलकाता पहुँचना है तो यह सरल वाक्य नहीं रह गया। अब यह पूरा वाक्य दो अलग-अलग वाक्यों से मिलकर बना है, जिसमें जाना है और पहुँचना है; दो क्रियाएँ हैं।

- ✧ सरल वाक्य में आने वाली क्रिया यदि अकर्मक हो, तो उस वाक्य में कर्म नहीं आ सकता; जैसे—वह सो गया।
- ✧ यदि सकर्मक क्रिया है, तो कर्म अवश्य आएगा; जैसे— छात्र ने पाठ पढ़ा।
- ✧ यदि सकर्मक क्रिया है और द्विकर्मक है, तो कर्म आएँगे; जैसे—सेठ ने नौकर को पैसे दिए।
- ✧ यदि प्रेरणार्थक क्रिया है, तो प्रेरक संज्ञा तथा प्रेरित संज्ञा दोनों का प्रयोग होगा—अध्यापक ने छात्रों से लेख लिखवाया।

(ii) संयुक्त वाक्य

❖ 'संयुक्त वाक्य' में आने वाले सभी उपवाक्य 'स्वतंत्र उपवाक्य' होते हैं। **स्वतंत्र उपवाक्य** से तात्पर्य यही है कि इनका प्रयोग भाषा में अलग से स्वतंत्र रूप में हो सकता है। 'संयुक्त वाक्यों' में आए उपवाक्य 'समान स्तर' के उपवाक्य होते हैं। यहाँ न कोई उपवाक्य किसी से बड़ा होता है और न कोई किसी से छोटा। इसीलिए संयुक्त वाक्यों के उपवाक्यों को **समानाधिकृत उपवाक्य** अथवा **समानाधिकरण उपवाक्य** भी कहते हैं; जैसे—

18 कार्यालयी पत्रों से सम्बन्धित ज्ञान

- हम पत्रों के माध्यम से न केवल दूसरों के दिलों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं बल्कि मैत्री बढ़ा सकते हैं तथा अपनों-समाज वालों को अपने वश में कर सकते हैं, अत: पत्र लिखना एक ऐसी कला है जिसके लिए बुद्धि और ज्ञान की परिपक्वता, विचारों की विशालता, विषय का ज्ञान, अभिव्यक्ति की शक्ति और भाषा पर नियन्त्रण की आवश्यकता होती है।
- इन सभी विशेषताओं के बिना हमारे पत्र अत्यन्त साधारण होंगे। किसी को प्रभावित करना तो दूर, वह हमारी अल्प बुद्धि का प्रतीक बन जाएँगे।
- पत्र केवल हमारे कुशल समाचारों के आदान-प्रदान का माध्यम ही नहीं अपितु उसके द्वारा आज के वैज्ञानिक युग में सम्पूर्ण कार्य व्यापार चलता है। अत: इसे लिखने और इसके आकार-प्रकार की पूरी जानकारी होनी अति आवश्यक है।
- पत्र-लेखन और विशेषत: व्यक्तिगत पत्र-लेखन आधुनिक युग में कला का रूप धारण कर चुका है। इस तरह पत्र द्वारा लेखक के व्यक्तित्व का भी परिचय मिल जाता है।
- पत्र, लेखक की बहुज्ञता, अल्पज्ञता, उसके शैक्षणिक स्तर, उसके चरित्र-संस्कार का प्रतिबिम्ब होता है। इसीलिए आज पत्र-लेखन केवल सम्प्रेषण न रहकर एक प्रभावशाली और उपयोगी कला का सुंदर और अनुकरणीय रूप बन गया है।

व्यावहारिक पत्र लेखन के लिए महत्त्वपूर्ण आधारभूत बिन्दु

- **सरलता**—पत्र की भाषा दुरूह और दुर्बोध नहीं होनी चाहिए। पत्र भाव और विचारों के सम्प्रेषण का माध्यम है, पाण्डित्य प्रदर्शन की क्रीड़ा-स्थली नहीं है। इसलिए पत्र में सरल और सुबोध भाषा का प्रयोग करना चाहिए।
- शब्द-संयोजन से लेकर वाक्य-विन्यास तक में किसी प्रकार की जटिलता न होना, भाषा में सरलता और सुबोधता के लिए अत्यावश्यक होता है। भाषा में जहाँ तक सम्भव हो, सामासिकता और अलंकारिता का उपयोग नहीं किया जाना चाहिए।
- पत्र में वाक्य अधिक लम्बे न हों और बात को छोटे-छोटे वाक्यों में ही कहा जाना चाहिए। इससे पत्र की भाषा में शीघ्र और सरल ढंग से अर्थ-सम्प्रेषण हो जाता है। लिखते समय विरामादि चिह्न का पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए।
- **स्पष्टता**—जो भी हमें पत्र में लिखना है वह यदि स्पष्ट, सुमधुर होगा तो न केवल स्वयं को आनन्ददायी होगा अपितु अन्य पढ़ने वालों पर भी उसका विशेष प्रभाव पड़ेगा।
- सरल भाषा-शैली, शब्दों का चयन, वाक्य रचना की सरलता पत्र को प्रभावशाली बनाने में हमारी सहायता करती है। इसलिए भारी भरकम और अप्रचलित शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए तथा छोटे व प्रवाहपूर्ण वाक्यों का प्रयोग करना चाहिए।
- **संक्षिप्तता**—पत्र में हमें अनावश्यक विस्तार से बचना चाहिए। पत्र जितना संक्षिप्त व गठा हुआ होगा उतना ही अधिक प्रभावशाली भी होगा।
- संक्षिप्तता का अर्थ यह भी नहीं कि पत्र अपने-आप में पूर्ण न हो। जो कुछ भी पाठक को कहा जाना है वह व्यर्थ के शब्द-जाल से मुक्त होना चाहिए।
- **प्रभावोत्पादकता**—पत्र की शैली से पाठक प्रभावित हो सके, तभी वह सफल होती है। हमारे विचारों की छाप उस पर पड़नी चाहिए। अत: इसके लिए शैली का परिमार्जित होना भी आवश्यक होता है।
- अच्छी व शुद्ध भाषा के बिना पत्र अपना असली रूप ग्रहण नहीं करता। वाक्यों का नियोजन, शब्दों का प्रयोग, मुहावरों का प्रयोग अच्छी भाषा के गुण होते हैं।
- **उद्देश्यपूर्णता**—कोई भी पत्र अपने कथन या मन्तव्य में स्वत: सम्पूर्ण होना चाहिए। उसे पढ़ने के उपरान्त, तद्विषयक किसी प्रकार की जिज्ञासा, शंका या स्पष्टीकरण की आवश्यकता शेष नहीं रहनी चाहिए।
- पत्र लिखते समय इस बात का विशिष्ट ध्यान रखा जाना चाहिए कि कथ्य अपने-आप में पूर्ण तथा उद्देश्य की पूर्ति करने वाला हो।
- **शिष्टता**—किसी पत्र में उसके लेखक के व्यक्तित्व, स्वभाव, पद-प्रतिष्ठा-बोध और व्यावहारिक आचरण की झलक मिलती है। सरकारी, व्यावसायिक तथा अन्य औपचारिक पत्र की भाषा-शैली शिष्टतापूर्ण होनी चाहिए।
- अस्वीकृति, शिकायत, छीझ या नाराजगी भी शिष्ट भाषा में प्रकट की जाए तो उसका अधिक लाभकारी प्रभाव पड़ता है।
- **चिह्नांकन**—पत्र में प्रयुक्त चिह्न पर हमें विशेष ध्यान देना चाहिए। चिह्नांकन अनुच्छेद (पैराग्राफ) का प्रयोग समुचित किया जाना चाहिए। हर नए विचार, नई बात के लिए पैराग्राफ, अल्पविराम, अर्द्ध विराम, पूर्ण विराम, कोष्ठक आदि का प्रयोग उचित स्थान पर ही होना चाहिए।
- **पत्र का क्रम व सुन्दर लेख**—पत्र में प्रभावोत्पादकता का समावेश करने के लिए क्रम और सुन्दर लेख की विशिष्ट भूमिका है। पत्र में जो भी विषय स्पष्ट किया जा रहा है उसका एक क्रम सुनिश्चित होना चाहिए। जो प्रमुख बात है उसे पत्र में पहले लिखा जाना चाहिए तथा गौण बात को बाद में स्थान देना चाहिए।
- पत्र में विषय प्रतिपादन के साथ-साथ यदि सुन्दर लेख का प्रयोग किया जाए तो पत्र में चार चाँद लग सकते हैं। इसके लिए आवश्यक है कि अच्छी गुणवत्ता वाला कागज़ हो तथा लेखनी की पकड़ व पत्र लिखते समय बैठने की स्थिति ठीक होनी चाहिए।

29. अधिसूचना का प्रकाशन कहाँ होता है?

(A) सोशल मीडिया (B) तार पत्र

(C) समाचार-पत्र (D) राजपत्र (गजट) **[D]**

व्याख्या—अधिसूचना का प्रकाशन **'राजपत्र' (गजट)** से होता है।

✧ **'राजपत्र' (गजट)** एक आधिकारिक राजपत्र किसी देश का या किसी देश के प्रशासनिक हिस्से का कानूनी समाचार पत्र होता है, जो नए **कानूनों, फरमानों, विनियमों, संधियों, कानूनी नोटिस और अदालती फैसलों का पाठ** प्रकाशित करता है।

✧ भारत का राजपत्र भारत सरकार का आधिकारिक प्रकाशन है जो वैधानिक आदेशों और अधिसूचनाओं को वहन करता है। **केन्द्रीय सचिवालय पुस्तकालय (CSL)** द्वारा **1922** से **2001** तक का **'डिजिटल डेटा'** प्रकाशन विभाग को दिया जाता है।

30. कार्यालयी पत्र में निम्न में से क्या नहीं होता?

(A) महोदय (B) भवदीय

(C) स्नेहाकांक्षी (D) विनीत **[*]**

व्याख्या—**कार्यालयी पत्र**—**किसी सरकारी, गैर-सरकारी, कार्यालयीय** अथवा **व्यावसायिक संस्थान** को लिखे जाने वाले अथवा कार्यालयों एवं संस्थानों द्वारा व्यक्ति अथवा संस्थानों को लिखे जाने वाले पत्रों को इस कोटि में सम्मिलित किया जाता है।

31. कार्यालय आदेश में सबसे ऊपर होता है—

(A) कार्यालय का नाम (B) आदेश की संख्या

(C) अधिकारी का नाम (D) संबोधन **[A]**

व्याख्या—**'कार्यालय आदेश'** में सबसे ऊपर कार्यालय का नाम होता है।

✧ **कार्यालय आदेश**—यह वह कार्यालयी पत्र है जिसमें किसी मंत्रालय, विभाग एवं कार्यालय के कर्मचारियों को उनकी **नियुक्ति, स्थायीकरण, स्थानान्तरण, पदोन्नति, अवकाश स्वीकृति-अस्वीकृति** आदि के विषय में आन्तरिक प्रशासन सम्बन्धी आदेश प्रसारित किए जाते हैं।

✧ कार्यालय आदेश की भाषा अन्य पुरुष में होती है। नीचे दाहिनी तरफ पद-सहित अधिकारी के हस्ताक्षर होते हैं तथा ऊपर मध्य में या बायीं तरफ आदेश की संख्या एवं सन्दर्भ दिया जाता है। दायीं ओर दिनांक रहती है। जिन व्यक्तियों को आदेश दिया जाता है, उनके नाम अन्त में बायीं और लिखे जाते हैं।

32. एकाधिक अधिकारियों या विभागों को प्रेषित सरकारी पत्र को कहते हैं—

(A) परिपत्र (B) विज्ञप्ति (C) अधिसूचना (D) निविदा **[A]**

व्याख्या—एकाधिक अधिकारियों या विभागों को प्रेषित सरकारी पत्र को कहते हैं **'परिपत्र'** कहते हैं।

✧ **परिपत्र**—जब किसी कार्यालय में किसी सामान्य कार्यालयी पत्र को, ज्ञापन को अथवा आदेश को एक साथ **अनेक प्रेषितियों** (पाने वाले) को भेजा जाना होता है, तो उसे **'परिपत्र'** कहते हैं। परिपत्र केन्द्रीय कार्यालय द्वारा अपने अधीनस्थ कार्यालयों को, एक कार्यालय द्वारा अपने अधीनस्थ सभी अनुभागों (सेक्शन) एवं शाखाओं को तथा उच्च अधिकारी द्वारा अधीनस्थ अधिकारियों को अथवा एक विभाग के अधिकारी द्वारा अन्य विभागों के अधिकारियों को भेजा जाता है।

33. उत्तम पुरुष में लिखा गया व्यक्तिगत नाम से संबोधित सरकारी पत्र है— **[Steno (RSSB) 30-05-13]**

(A) परिपत्र (B) कार्यालय आदेश

(C) अधिसूचना (D) अर्द्ध सरकारी पत्र **[D]**

व्याख्या—उत्तम पुरुष में लिखा गया व्यक्तिगत नाम से संबोधित सरकारी पत्र है - **अर्द्ध सरकारी पत्र**।

✧ **अर्द्धशासकीय या अर्द्धसरकारी**—पत्र भी एक प्रकार का सरकारी-पत्र ही होता है। दोनों में अन्तर केवल अनौपचारिकता-औपचारिकता का है। अर्द्धशासकीय-पत्र अनौपचारिक होते हैं और, शासकीय-पत्र औपचारिक।

✧ ये पत्र किसी व्यक्ति को व्यक्तिगत रूप से लिखे जाते हैं। जब कोई अधिकारी किसी दूसरे अधिकारी से व्यक्तिगत स्तर पर कोई जानकारी चाहता है या किसी बात की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता है तो वह अर्द्धशासकीय-पत्र को माध्यम बनाता है।

34. नियम, आदेश, अधिकार और नियुक्ति संबंधी गजट में प्रकाशित सूचना है— **[Steno (RSSB) 30-05-13]**

(A) अधिसूचना (B) कार्यालय आदेश

(C) कार्यालय ज्ञापन (D) अनुस्मारक **[A]**

व्याख्या—**नियम, आदेश, अधिकार और नियुक्ति संबंधी** गजट में प्रकाशित सूचना - अधिसूचना होती है।

✧ **अधिसूचना** पत्राचार का ऐसा रूप है जिसका प्रकाशन राजकीय गजट में सर्वसाधारण के सूचनार्थ किया जाता है। **लोक-विषयक मामलों, शासकीय निर्णयों, सूचनाओं और अन्य सांविधिक आदेशों** को सर्वसाधारण के सूचनार्थ राजकीय गजट में प्रकाशित पत्र को **'अधिसूचना'** या **'विज्ञप्ति'** कहते हैं।

35. परिपत्र में निम्न में से क्या नहीं होता?

(A) पृष्ठांकन (B) विषय

(C) अधिकारी का पदनाम (D) संबोधन **[D]**

व्याख्या—परिपत्र में उपरोक्त में से **'संबोधन'** नहीं होता है।

✧ **परिपत्र**—जब किसी कार्यालय में किसी सामान्य कार्यालयी पत्र को, ज्ञापन को अथवा आदेश को एक साथ अनेक प्रेषितियों (पाने वाले) को भेजना होता है, तो उसे **'परिपत्र'** कहते हैं। परिपत्र केन्द्रीय कार्यालय द्वारा **अपने अधीनस्थ कार्यालयों को,** एक कार्यालय द्वारा अपने अधीनस्थ सभी अनुभागों (सेक्शन) एवं शाखाओं को तथा उच्च अधिकारी द्वारा **अधीनस्थ अधिकारियों को** अथवा एक विभाग के अधिकारी द्वारा अन्य विभागों के अधिकारियों को भेजा जाता है।

दक्ष की पुस्तकें Online Order करने के लिए www.dakshbooks.com पर जायें

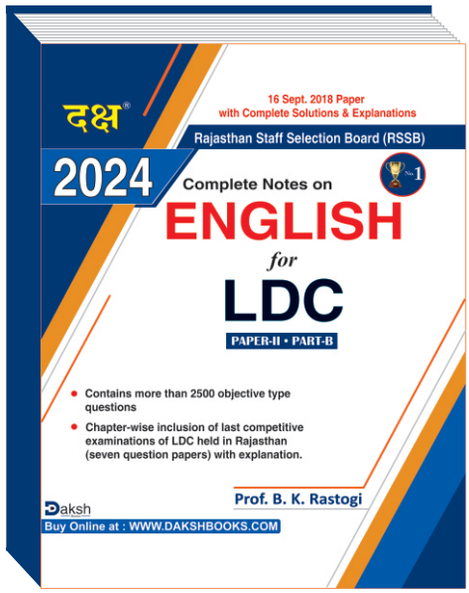

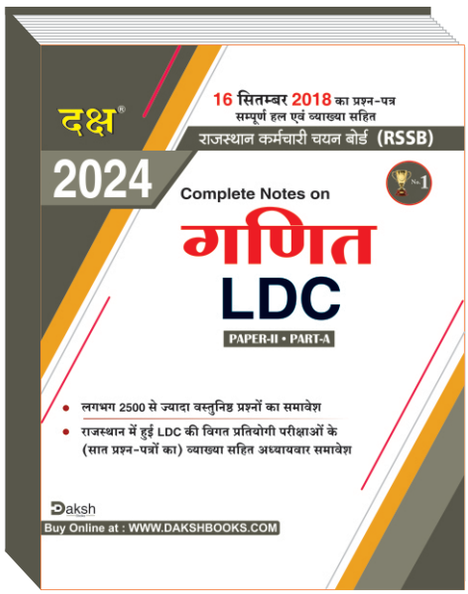

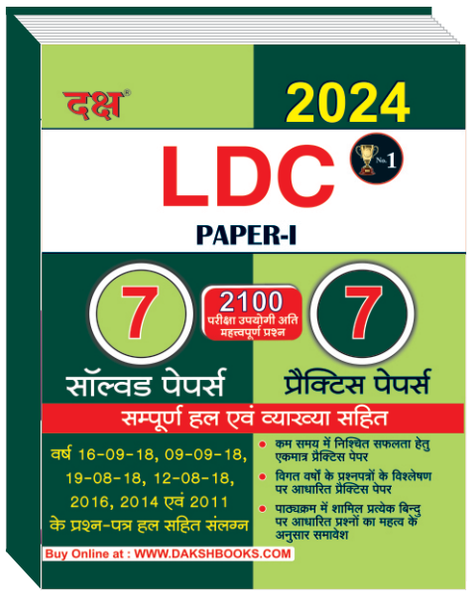

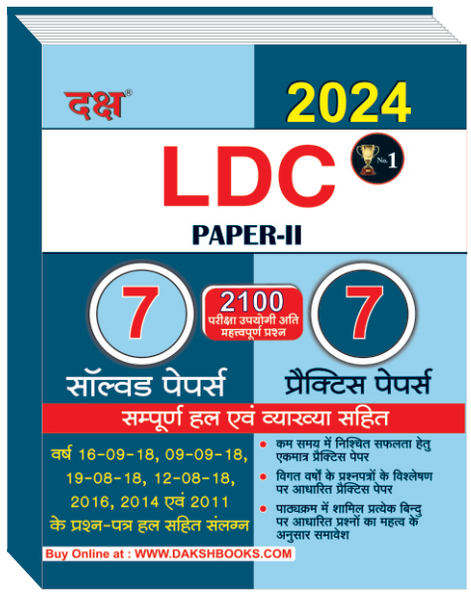

दक्ष प्रकाशन
(A Unit of College Book Centre)
A-19 सेठी कॉलोनी, जयपुर (राज.)
फोन नं. 0141-2604302
Code No. D-754 | ₹ 400/-

इस पुस्तक को ONLINE खरीदने हेतु
WWW.DAKSHBOOKS.COM
पर ORDER करें
★ SPECIAL DISCOUNT + FREE DELIVERY ★